तिब्बती अपहृत बालक

11वें पेंछेन लामा गेंदुन छोक्यि ञिमा
की स्मृति में कथा

तिब्बती अपहृत बालक

11वें पेंछेन लामा गेंदुन छोक्यि ञिमा
की स्मृति में कथा

सूचना एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग
केंद्रीय तिब्बती प्रशासन

प्रकाशक:
संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ और मानवाधिकार देस्क
सूचना एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग
केंद्रीय तिब्बती प्रशासन, धर्मशाला
हिमाचल प्रदेश-176215

Email: euhrdesk@tibet.net
www.tibet.net

© 2022 DIIR

Cover Illustration:
Sudip Roy

Design & Printed by:
Norbu Graphics, New Delhi

विषय-सूची

प्रस्तावना--4
परिचय ---7
पेंछेन लामा की उत्पत्ति, उपाधि एवं महत्व---------------------------------9
10वें पेंछेन लामा---12
70 हज़ार अक्षरों की याचिका--------------------------------------20
11वें पेंछेन लामा की तलाश---------------------------------------25
पेंछेन लामा की रिहाई हेतु संयुक्त राष्ट्र के प्रयासों की अनुसूची-------------------29
अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा 11वें पेंछेन लामा की रिहाई पर बयानः---------------32

- पाँच संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार विशेषज्ञों तथा मानवाधिकार निकायों-----33
- एंड्रयूस नेविकेस, लिथूयाना सियामस के सदस्य---------------------37
- ब्रेंड, शुवाबे, जेनसेन, बोअस, सीडीयू/सीएसयू, एसडीएफ, एफडीपी, ऐलायन्स 90/दा ग्रीन्स, जर्मनी के मानवाधिकार नीति की प्रवक्ताएं--------------38
- तिब्बत पर चेक सर्वदलीय संसदीय समूह, चेक गणराज्य--------------39
- गारनेट जिनस, कनाडा के सांसद---------------------------------40
- जेम्स मैक्गोवर्न, अमेरिका प्रतिनिधि सभा के सांसद------------------42
- माइक पोम्पीयो, अमेरिका राज्य विभाग के सचिव-------------------43
- स्लोवाक गणराज्य के राष्ट्रीय परिषद, स्लोवाकिया--------------------44
- रिपून बोरा, संसद सदस्य, भारत---------------------------------45
- रोबर्टो रेम्पी, संसद सदस्य, इटली---------------------------------46
- सैम्यूल कोगलाटी, संसद सदस्य, बेल्जियम-------------------------47
- सैम्यूल ब्रोउनबैक, अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता के लिए विशेष राजदूत, संयुक्त राज्य अमेरिका--48
- शिमोमुरा हाकुबुन, संसद सदस्य, जापान--------------------------49
- तिब्बत हेतु स्विस संसदीय समूह, स्विडजरलैंड----------------------50
- तिब्बत हेतु ताइवान संसदीय समूह, ताइवान-----------------------51
- तिब्बत इंटरेस्ट ग्रुप, यूरोपीय संसद, यूरोप--------------------------52
- टीम लॉगटन, संसद सदस्य, यूनाइटेड किंगडम----------------------54
- वेलेनकोसीनी एफ. हलबीसा, इंकाथा फ्रीडम पार्टी के अध्यक्ष, दक्षिण अफ्रीका---55
- वारेन ऐन्छ, संसद सदस्य, ऑस्ट्रेलिया----------------------------57
- टिप्पणियाँ--58
- सन्दर्भ ग्रंथसूची---60

प्रस्तावना

प्रस्तावना

चीनी कम्युनिस्ट शासन द्वारा तिब्बत के 11वें पेंछेन लामा को गायब किये जाने की 26वीं वर्षगांठ पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने “तिब्बती अपहृत बालकः 11वें पेंछेन लामा गेंदुन छोक्यि ञिमा की स्मृति में कथा” नामक पुस्तक पेंछेन लामा के आसन की ऐतिहासिक, समकालीन तथा भविष्य के महत्व पर जानकारी देने के लिए प्रकाशित किया है। इस पुस्तक को प्रारम्भिक में अंग्रेजी और चार अन्य भाषाओं तिब्बती, जापानी, चीनी तथा हिंदी में प्रकाशित किया गया है। 17 मई 2021 को तिब्बती, अंग्रेजी और जापानी के पूर्व तीन प्रकाशन का विमोचन किया था। हम यह उम्मीद करते है कि वर्तमान प्रकाशन हिंदी और चीनी क्रमशः भारत तथा चीन के जनता को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा तिब्बत के पेंछेन लामा तथा उसका जबरन गायब किये जाने के बारे में अधिक जानकारी देंगे।

सूचना एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग, पेंछेन लामा की हिमायत कार्यक्रम को संभव बनाने, इन पुस्तकों के प्रकाशन में सहायता प्रदान करने तथा अंतर्राष्ट्रीय हिमायत यात्रा में अर्थिक सहयोग देने के लिए लोकतंत्र के लिए राष्ट्रीय बंदोबस्ती अर्थात नेशनल एंडोमेंट फॉर डेमोक्रेसी (एनईडी) को आभार प्रकट करते है।

पेंछेन लामा की हिमायत अभियान चार प्रमुख उद्देश्यों पर कार्य करता है। सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण, पेंछेन लामा के स्वास्थ्य और उनके परिवार तथा जड्रेल रिंपोछे के बारे में जानकारी को प्रचारित करने हेतु एक स्वतंत्र तथ्यान्वेषी मिशन की अनुमति देने के लिए चीन लोक गणराज्य पर दबाव जारी रखने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से आग्रह करना है।

दूसरा, 10वें पेंछेन लामा को उनके द्वारा तिब्बत तथा तिब्बती लोगों के प्रति बलिदानों के लिए सम्मानित करना है। 10वें पेंछेन लामा ने चीनी शासन में कई वर्षों तक यातनाएं तथा जेल में रहने के बाद भी वह अपनी दृढ़ संकल्प और इच्छाशक्ति के साथ तिब्बती लोगों, संस्कृति तथा धर्म के प्रति समर्पित रहा है। तिब्बत और तिब्बती लोग उसके बलिदानों के लिए ऋणी है।

तीसरा, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा तिब्बती बौद्ध प्रणाली के पुनर्जन्म मामले में हस्तक्षेप करने के लिए निंदा करना है। 2007 में चीन के “ऑडर ना0 5” यह अनिवार्य किया जाता है कि सभी बौद्ध मठों के व्यक्तियों को पुनर्जन्म वाले प्राणी के रूप में पहचानने से पहले पुनर्जन्म के आवेदन सरकार को प्रस्तुत करना होगा। यह तिब्बती लोगों के सदियों पुरानी तिब्बती बौद्ध धर्म के पुनर्जन्म परंपरा को अपवित्र करता है। यदि उसका सामना नहीं किया तो चीनी सरकार निश्चित

रूप से न केवल तिब्बती बौद्धों के खिलाफ बल्कि अन्य सभी धार्मिक परंपरा के खिलाफ भी अधिक अपमानजनक नीतियों लागू करेंगे।

अंत में, परम पावन दलाई लामा जी के पुनर्जन्म मामले में बीजिंग की रणनीति को पहले से जानना है और उसे विफल करना है। परम पावन दलाई लामा जी ने पिछले साठ वर्षों से तिब्बती लोगों की अधिकारों का संरक्षण किया है। चीनी सरकार ने बिना कोई विश्वसनीयता और वैधता के अगले दलाई लामा की चयन करने की घोषणा किया है। परम पावन दलाई लामा जी के पुनर्जन्म के संबंध में बीजिंग की रणनीति को हमें 11वें पेंछेन लामा की जबरन गायब होने के आलोक में समझना होगा।

पिछले साठ वर्षों से तिब्बत के अंदर तिब्बतियों को अपनी बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित किया गया है। चीन के दमनकारी शासन में, तिब्बत एक विशाल कारागर की तरह बना हुआ है। मैं अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा तिब्बती पहचान और मानवता की बुनियादी मूल्यों को नष्ट करने के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की आग्रह करता हूं। चीनी कम्युनिस्ट शासन द्वारा पेंछेन लामा तथा अवैध रूप से कैद किए गए अन्य सभी तिब्बतियों को शीघ्र रिहाई हेतु मांग करने के लिए एक सशक्त और एकजुट प्रतिक्रिया प्रदर्शित करने की जरूरत है।

Central Tibetan Administration
Department of Information & International Relations

नोरजीन डोल्मा
कालोन (मंत्री)
सूचना एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग, धर्मशाला

सितंबर 2022

बाएं सेः 10वें पेंछेन लामा, अध्यक्ष माओ चे़दुंग,
परम पावन 14वें दलाई लामा 1954

परिचय

17 मई 1995 को छह साल के तिब्बती बालक गेंदुन छोक्यि ञिमा को 11वें पेंछेन लामा के रूप में मान्यता देने के तीन दिन बाद चीनी सरकार ने उन्हें बाल्यावस्था में अपहरण किया था। पेंछेन लामा के साथ उनके माता-पिता, भाई एवं जड्रेल रिन्पोछे * को भी अपहरण कर लिया था। पिछले पच्चीस सालों से चीनी शासन ने उनके ठिकाने तथा स्वास्थ्य के बारे में कोई जानकारी देने से मना किया है। इसके विपरीत चीनी शासन ने पेंछेन लामा तथा उनके परिजनों के बारे में अविश्वसनीय और झूठा बयान देते रहें है। सन् 2015 में चीन सरकार के प्रवक्ता ने कहा कि पेंछेन लामा शिक्षित है, वह सामान्य जीवन जी रहे है, अच्छे स्वास्थ्य में बढ़ रहे है और वह नहीं चाहते कि उन्हें कोई परेशान करें।[1] और हाल ही में चीनी शासन ने एक बयान में कहा है कि पेंछेन लामा महाविद्यालय से स्नातक के साथ काम कर रहा है और न तो वह और नही उनका परिजन अपने वर्तमान सामान्य जीवन में कोई परेशानी नहीं चाहते है।[2]

परम पावन दलाई लामा जी के बाद, पेंछेन लामा तिब्बती बौद्ध धर्म में सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक गुरु में से एक है। तिब्बत पर चीनी आक्रमण के दौरान 14वें दलाई लामा और 11वें पेंछेन लामा दोनों उस समय समकालीन थे। 1959 में परम पावन दलाई लामा जी को तिब्बत से निर्वासन में पलायन के बाद तिब्बत में 10वें पेंछेन लामा ने तिब्बतियों का नेतृत्व किया था। इसके तुरन्त बाद 10वें पेंछेन लामा को “तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के लिए प्रारम्भिक समिति” के कार्यवाहक अध्यक्ष नियुक्त किए गए था। चीनी शासन ने पेंछेन लामा को “अमूल्य राजनीतिक उपकरण” के रूप में देखा था। तिब्बत के धार्मिक लोगों तथा तिब्बत के अन्दर चीनी नीतियों को वैधता प्राप्त करने के लिए एक साधन के रूप में उपयोग करना चाहा। लेकिन चीन सरकार के लिए पेंछेन लामा एक मुखपत्र बनने के लिए बहुत पुण्य साबित नहीं हुआ। सन् 1962 में पेंछेन लामा जी ने तिब्बत में माओ की नीतियों का प्रामाणिक उदाहरण देते हुए 70 हज़ार अक्षरों वाले याचिका (70,000 Character Petition) की आलोचना प्रस्तुत किए थे। जिसके परिणामस्वरूप उन्हें चौदह सालों तक हिरासत में रखा गया।

प्रसिद्ध तिब्बत विशेषज्ञ रोबी बेरनाट ने इस याचिका पर लिखा कि हमारी जानकारी के अनुसार चीन में ऐसा कोई अन्य दस्तावेज नहीं मिलेगा जहाँ एक

** जड्रेल रिन्पोछे तिब्बत में टाशि ल्हुन्पो मठ के मठाधीश थे जो कि पेंछेन लामा के पारम्परिक आसन है। वह 11वें पेंछेन लामा की खोजने के लिए तलाश समिति के प्रमुख थे।*

वरिष्ठ अधिकारी इतनी विस्तार से अध्यक्ष माओ के नीतियों और प्रथाओं को लेकर खुलकर विस्तार से हमला किया हो।[3]

सन् 1977 में पेंछेन लामा का चीन जेल से रिहा होने के बाद भी, उन्होंने तिब्बती लोगों की कल्याण के लिए निरन्तर कार्य जारी रखा था। उन्होंने ज्यादातर समय तिब्बती संस्कृति जैसे मठों और स्कूलों की पुनर्निर्माण के लिए समर्पित किया था। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि 10वें पेंछेन लामा जी तिब्बती लोगों की सच्चे रक्षक थे। उन्होंने अपने जान को ख़तरे में डालते हुए तिब्बत में तिब्बती लोगों की हितों के लिए बोला है और उनके लिए कार्य भी किया है।[4] वास्तव में उन्हें आधुनिक तिब्बती इतिहास में तिब्बतियों की पहली मानवाधिकारों के रक्षकों के रूप में माना जाना चाहिए।[5]

28 जनवरी 1989 को 10वें पेंछेन लामा जी का निधन हुआ था जिसके कारण तिब्बत में स्थिति बहुत गम्भीर हो गई थी। तिब्बत पर चीनी कब्ज़े के बाद ऐसा पहली बार हुआ है जब पुनर्जन्म की खोज में तिब्बत की राजनीतिक परिदृश्य में बहुत बड़ा बदलाव देखा है। चीनी सरकार के नज़र में यह एक सही अवसर है जहाँ वह तिब्बत पर अपने शासन को सुधार करने के लिए पेंछेन लामा नियुक्त करके तिब्बत पर सीधे नियंत्रण एवं सफ़ाई से काम करना था। लेकिन तिब्बतियों के लिए परम पावन दलाई लामा जी द्वारा मान्यता प्राप्त पेंछेन लामा को ही वह सही मायने में सम्मान और विश्वास करेंगे। यह वास्तव में समझ से बाहर हैं क्योंकि चीनी कम्यूनिस्ट के संस्थापक माओ त्सेदुंग ने कुख्यात रूप से कहा था कि धर्म एक ज़हर हैं [6] और दूसरी तरफ़ चीन पेंछेन लामा के पुनर्जन्म चयन करने के मामले में अपना अधिकार दावा कर रहा है। फिर भी चीन सरकार ने तिब्बत में अपना सम्पूर्ण नियंत्रण रखने के लिए तिब्बत के लोगों पर हर प्रकार की बल अपनाया है और उससे वह कभी कतराते नहीं थे।

14 मई 1995 में परम पावन दलाई लामा ने माध्य तिब्बत के नागछू से गेंदुन छोक्यि ञिमा नामक बालक को 11वें पेंछेन लामा की स्वीकृति दी थी। इसके तुरन्त तीन दिन बाद 11वें पेंछेन लामा सहित उनके माता, पिता और बड़े भाई को अपने गाँव के पास से विमान के जारिए हिरासत में ले गया।[7] तब से लेकर अब तक उनके बारे में किसी को कोई जानकारी नहीं है, ना किसी ने देखा है और ना किसी ने सुना हैं। उसकी जगह चीन सरकार ने पार्टी सदस्य के पुत्र ग्यालछेन नोर्बू नामक बालक को उनके कठपुतली पेंछेन लामा के रूप में स्वीकृत किया।[8] आज तक तिब्बतियों ने ग्यालत्सन नोर्बू को कोई मान्यता नहीं दी है फिर भी चीनी शासन उन्हें पेंछेन लामा के रूप में विशाल प्रदर्शन किया जा रहा है जबकि सच्चा अवतार पेंछेन लामा अब भी चीनी जेल में क़ैद हैं।

पेंछेन लामा की उत्पत्ति, उपाधि एवं महत्व

परम पावन दलाई लामा जी और पेंछेन लामा के बीच विशेष आध्यात्मिक सम्बन्ध रहा है और उन्हें तिब्बती बौद्ध परम्परा में “यब से गोन्पो” जिसका अर्थ है पिता/पुत्र संरक्षक, से भी जाने जाते हैं। तिब्बती बौद्ध परम्परा में ऐसा माना जाता है कि पेंछेन लामा को असीम प्रकाश बुद्ध यानी बुद्धा अमिताभ (Tib: འོད་དཔག་མེད།) का अवतार और परम पावन दलाई लामा को करुणा का बोधिसत्व यानी भगवान अवलोकितेश्वर (Tib:སྤྱན་རས་གཟིགས།) के अवतार मानते हैं।

चौथा पेंछेन लामा व पेंछेन लामा उपाधि से सम्मानित पहला व्यक्ति

17वीं शताब्दी के समय से ही दलाई लामाओं और पेंछेन लामाओं के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। जब चौथा दलाई लामा का 1617 में निधन हुआ था, तब उनके दिवंगत गुरु लोब्संङ छोक्यि ने चौथे दलाई लामा जी के पुनर्जन्म की खोज का ज़िम्मेदारी ली थी। लोब्संङ छोक्यि और चौथे दलाई लामा बहुत ही क़रीब थे, यह वह व्यक्ति था जिसने चौथे दलाई लामा को एक भिक्षु के रूप में पहला प्रतिज्ञा दिलाई थी।[9] पाँचवे दलाई लामा का पहचान के बाद, उन्हें युवा अवस्था में मध्य तिब्बत के छोंग्या गाँव से तिब्बत के सबसे बड़े मठ ड्रेपुंङ में लाया गया था। सन् 1625 में पाँचवे दलाई लामा के भी शिक्षक लोब्संङ छोक्यि ने युवा दलाई लामा को मठवासी शिक्षा की दीक्षा दी।[10]

टाशि ल्हुन्पो मठ, शिगाचे़, पेंछेन लामा के पारम्परिक निवास

पाँचवें दलाई लामा जी को अक्सर लोग “महान पाँचवा” के रूप में जाना जाता हैं क्योंकि वह पहला दलाई लामा है जिन्होंने तिब्बत के सभी राजनीतिक एवं अध्यात्मिक उत्तराधिकारी की ज़िम्मेदारी ली थी। अपने गुरु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु पाँचवें दलाई लामा जी ने लोब्संङ छोक्यि को पेंछेन लामा का नाम प्रदान की जिसका अर्थ है “अनमोल शिक्षक”। लोब्संङ छोक्यि वह पहला पेंछेन लामा थे जिन्हें इस उपाधि से सम्मानित किया गया था। लेकिन इस नाम को पूर्व के सभी तीनों अवतारों को भी प्रदान किया गया था, जिससे वे चौथे पेंछेन लामा बन गए।[11] लोब्संङ छोक्यि ने अपने पूर्वजों की मार्ग पर चलते हुए टाशि ल्हुन्पो मठ की मठाधीश के रूप में सेवा की थी।

पिछले तीन शताब्दियों के अधिक समय से दलाई लामाओं और पेंछेन लामाओं के अच्छे सम्बन्धों ने तिब्बत की राजनीतिक परिदृश्य का आकार मिला है। गेलुग बौद्ध परम्परा के सर्वोच्च आध्यात्मिक गुरुओं के रूप में पेंछेन लामा जी और दलाई लामा जी के उत्तराधिकारियों ने एक दूसरे के प्रति गुरु और शिष्य के रूप में एक दूसरे के लिए कार्य किया है। उन

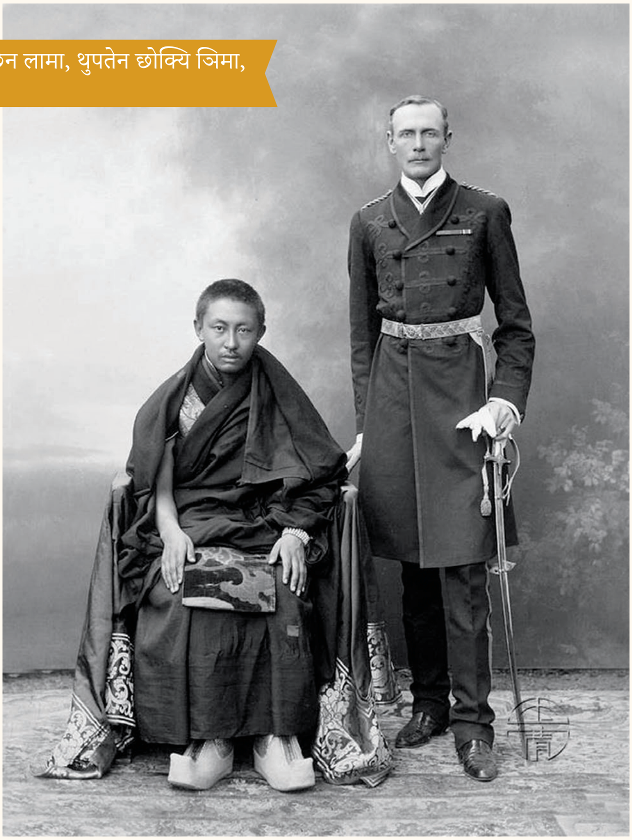

9वें पेंछेन लामा, थुपतेन छोक्यि ञिमा, 1905

दोनों के जीवन में जो भी बड़े होते हैं उन्हें मठवासी दीक्षा और तांत्रिक वंश सौंपने की ज़िम्मेदारी लिया है। इसके अतिरिक्त, किसी एक की गुज़ार जाने के बाद दूसरे ने पारम्परिक रूप से पुनर्जन्म* मामले में पहचान करने की मुख्य भूमिका निभाई हैं। हाल में, 9वें पेंछेन लामा जी ने वर्तमान 14वें दलाई लामा जी की पहचान करने में मदद की हैं, उसी प्रकार 10वें पेंछेन लामा जी और 11वें पेंछेन लामा जी को 14वें दलाई लामा जी ने मान्यता दी हैं।

यह ध्यान में रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि दो लामाओं की मान्यता के लिए आपसी मान्यता जरुरी नहीं है। ऐसा नहीं है कि केवल पेंछेन लामा ही दलाई लामा की पहचान कर सकते है और दलाई लामा ही पेंछेन लामा की पहचान करते है।

10वें पेंछेन लामा और परम पावन 14वें दलाई लामा, 1954

10वें पेंछेन लामा

10वें पेंछेन लामा जी, लोब्संङ ठ्रिन्ले ल्हुन्डुप छोक्यि का सन् 1938 में उत्तर-पूर्वी तिब्बत के आम्दो प्रान्त के कारंग बिदो गाँव में जन्म हुआ था।

1951 में परम पावन 14वें दलाई लामा जी ने आधिकारिक रूप से छोक्यि ग्यालछेन को तेन्ज़िन ठ्रिन्ले जिग्मे छोक्यि वाङछुग उपाधि के साथ 10वें पेंछेन लामा जी की मान्यता दी थी। छोक्यि ग्यालछेन का 10वें पेंछेन लामा की मान्यता प्राप्त करने के तुरन्त बाद 28 अप्रैल 1952 में ल्हासा पहुँचा था। ल्हासा में कुछ समय के लिए प्रवास के दौरान उन्होंने दो बार परम पावन दलाई लामा जी का दर्शन मिला। परम पावन दलाई लामा जी ने पेंछेन लामा जी के साथ मुलाकात की स्मरण अपनी पुस्तक मेरा देश, मेरे देशवासी में उल्लेख किया है। परम पावन दलाई लामा जी कहते है कि तिब्बती बौद्ध परम्परा के अनुसार एक वरिष्ठ भिक्षु को सम्मान करने की आवश्यकता के तहत पेंछेन लामा जी ने भी मेरी पद के लिए सच्चा सम्मान दिखाया है। एक सच्चा तिब्बती की तरह वह अपने शिष्टाचार में सही और सुखद था। और मुझे अप्रत्याशित सद्भावना की दृढ़ छाप मिली थी।[12]

10वें पेंछेन लामा का कुमबुम मठ में राज्यभिषेक, 1954

1954 में परप पावन दलाई लामा जी और पेंछेन लामा जी को चीन सरकार ने पहला राष्ट्रीय लोग कांग्रेस के लिए सम्मानित प्रतिनिधियों के रूप में चुने गये थे। इस क्षमता में, उन दोनों ने बेजिंग की यात्रा की थीं और दलाई लामा जी को पहला राष्ट्रीय लोग कांग्रेस की स्थाई समिति के उपाध्यक्ष और पेंछेन लामा जी को चाईनीज पीपल्स पोलिटिकल कांसलटेटिव कांग्रेस के उपाध्यक्ष जैसे अनेक पदों के साथ मनोनीत की गई थीं।[13] उन्हें अलग

अलग पदों में नामित किया था लेकिन वास्तव में उनके पास बहुत काम ही अधिकार थे।

1959 में परम पावन दलाई लामा जी का निर्वासन में पलायन के बाद, पेंछेन लामा जी को “तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के लिए प्रारम्भिक समिति” की कार्यवाहक अध्यक्ष नियुक्त किया था। इसके बावजूद, पेंछेन लामा जी सही मायने में एक सच्चा तिब्बती राष्ट्र भक्त बने रहें। उन्हें अत्यन्त चिन्ता हुई जब यह पता चला कि चीनियों ने हज़ारों तिब्बती सरकारी अधिकारियों, उच्च

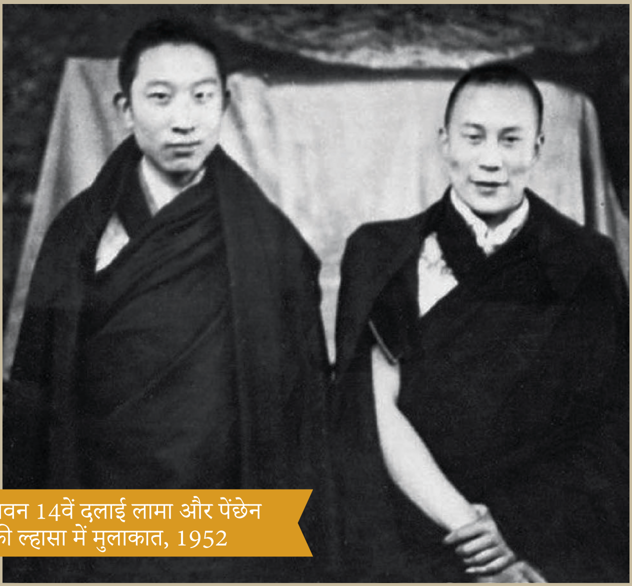

परम पावन 14वें दलाई लामा और पेंछेन लामा की ल्हासा में मुलाकात, 1952

लामाओं, विद्वानों, समुदाय के नेताओं तथा हर वर्ग के तिब्बती लोगों को जेल में डाल दिया था। उन्होंने चीनी अधिकारियों द्वारा सम्पूर्ण तिब्बत की पूरी आबादी को तबाह करने की साजिश का शिकायत किया है। चीनियों ने उनकी विरोध का यह सफ़ाई दिया है कि ऐसी छोटी ग़लतियाँ सुधार आन्दोलन में अनिवार्य हैं। सन् 1962 में राष्ट्रीय लोग कांग्रेस के उप-अध्यक्ष की योग्यता में पेंछेन लामा ने तिब्बत के सभी क्षेत्रों के साथ शिंझियांग और दक्षिण चीन का निरीक्षण के लिए दौरा की थीं। उन्होंने अपने यात्रा की पूरी संस्करण 70 हज़ार अक्षरों की याचिका (70,000 Character Petition) नामक से जानने वाले पुस्तक में लिखा है। (इस याचिका का विस्तार भाग अगले अध्याय में प्रस्तुत है)

मई 1962 की एक शाम को पेंछेन लामा जी ने अपने शिक्षक को आवास में आमंत्रित कर कहा कि मैं, यह याचिका चीनी नेतृत्व को प्रस्तुत कर रहा हूँ। पेंछेन लामा जी के गुरु ने उन्हें प्रार्थना करते हुए इस याचिका को चीनी अधिकारियों को ना प्रस्तुत करने की अनुरोध किया था। उन्होंने पेंछेन लामा को तर्क देते हुए कहा कि चीन सरकार को तिब्बत की स्थिति के बारे में पूरी तरह जानकारी है और यदि वह इसे ठीक करना चाहते हैं तो वह पहले से ही ठीक कर चूके होते।[14] हालाँकि पेंछेन लामा जी ने उनसे कहा कि मुझे तिब्बत की लोगों के प्रति कार्य करने की अपरिहार्य ज़िम्मेदारी है।

18 मई 1962 को पेंछेन लामा जी ने चीन के प्रधानमंत्री ज़ाउ एनलाई के साथ मुलाक़ात कर यह याचिका पेश किया था। इस याचिका का मूल प्रति तिब्बती

भाषा में है, चीनी भाषा में इसका अनुवाद किया था। पेंछेन लामा जी ने चीनी अधिकारियों से इस याचिका को जिस प्रकार से लिखे हैं उसी प्रकार से स्वीकार करने तथा तिब्बत में सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दुर्दशा की सुधार करने की आग्रह किया। इसके अलावा याचिका में यह कहा है कि हमारे पास कोई साधन नहीं हैं कि कितने तिब्बतियों की विद्रोह के दौरान गिरिफ़्तारी हुई हैं परन्तु हमें बाहरी चीज़ों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि तिब्बत के सभी क्षेत्रों से दस हज़ार या उससे अधिक की संख्या में तिब्बतियों को बन्दी बना रखा है। इसलिए अगर हम कहते हैं कि यह सभी लोग शत्रु हैं तो हम यह पुष्टि कर सकतें है कि महिलाएं, बूढ़े, बच्चें और कुछ युवा पुरुष के अलावा शायद ही कोई तिब्बती हमारे बीच बचा हो।[15]

पेंछेन लामा की याचिका के जवाब में चीनी प्रधानमंत्री ज़ाउ एनलाई ने यूनाइटेड फ्रोंड डिपार्टमेंट के नेताओं और वरिष्ठ चीनी अधिकारियों को तिब्बत में उनके कार्य की समीक्षा करने का निर्देश दिया था। वे अपने नीतियों में सुधार करने के लिए चार दस्तावेज़ों के साथ आए।[16] अगस्त 1962 में पेंछेन लामा जी तिब्बत वापस लौट गए, यह उम्मीद लेकर कि चीनी नेतृत्व उनकी याचिका में गहरी रूची ले रहे हैं और तिब्बती लोगों की प्रति उनके सहयोग के

नेशनल पीपुल्स कांग्रेस में तिब्बती प्रतिनिधिमंडल, 1954

प्रयासों में सफल हो रहा हैं। प्रारम्भ में इस याचिका का सकारात्मक प्रभाव दिख रहा था, चीनियों ने तिब्बत के विभिन्न मठों में भिक्षुओं की संख्या बढ़ाने को स्वीकार किया और 1959 से चीनी हिरासत में क़ैद किए गए कई तिब्बती अधिकारियों को भी रिहा कर दिया था।[17]

हालाँकि स्थिति बहुत गम्भीर मोड़ पर आ गई जब केन्द्रीय समिति बैठक के दौरान राष्ट्रपति माउ चे़दुंग ने यूनाइटेड फ्रोंड वार्क डिपार्टमेंट के नेताओं द्वारा पेंछेन लामा जी के प्रति अतिप्रियता पर अलोचना किया। माओ के अनुसार पेंछेन लामा जी बहुत ज्यादा गौरवान्वित बन गये हैं।[18] पेंछेन लामा पर एक “प्रतिक्रियात्मक बल” होने का आरोप लगाया था और आत्म-आलोचना करने का आदेश दिया था। जब इस बैठक का ख़बर तिब्बत में पहुँचा तब तिब्बत कार्य समिति के चीनी नेतागण खुश हुए। उनके नज़र में पेंछेन लामा को चीन सरकार के खिलाफ़ 70 हज़ार अक्षरों की याचिका के आलोचना का दण्ड देने का समय आ गया है। अक्टूबर 1962 में तिब्बत कार्य समिति ने पेंछेन लामा जी को प्रतिक्रियात्मक गर्व के आरोप लगाया तथा उन्हें आत्मा-आलोचना करने की निर्देश दिया परन्तु उन्होंने इसको अस्वीकार किया।[19]

1964 के महान प्रार्थना उत्सव (मोनलम छेनमो) के दौरान पेंछेन लामा जी ने चीनी नेतृत्व को दुबारा क्रोधित किया जब उन्होंने दास हज़ार से अधिक भीड़ में यह

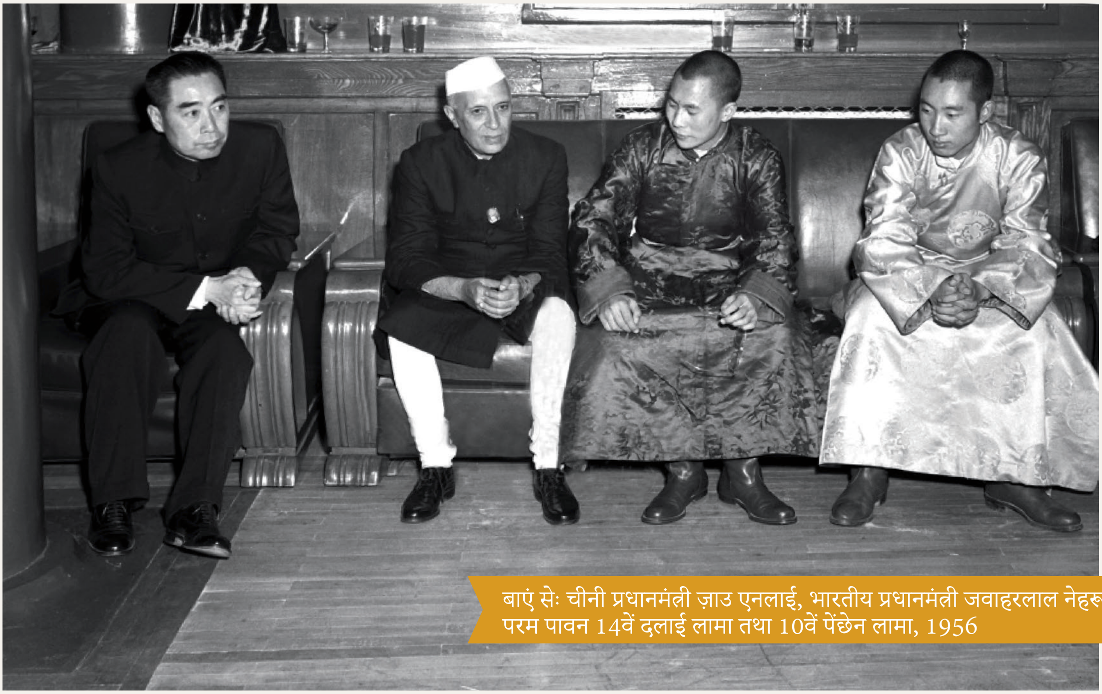

बाएं सेः चीनी प्रधानमंत्री ज़ाउ एनलाई, भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, परम पावन 14वें दलाई लामा तथा 10वें पेंछेन लामा, 1956

पेंछेन लामा की चीनी प्रधानमंत्री ज़ाउ एनलाई के साथ मुलाकात, 1961

घोषणा किया किः आज जब हम यहाँ एकत्रित हुए है, मैं यह पूरा विश्वास के साथ घोषणा करता हूँ कि परम पावन दलाई लामा जी का स्वर्ण गद्दी पर वापसी होंगे। परम पावन दलाई लामा जी अमर रहें।[20]

पेंछेन लामा के ऐसे साहसी और अवहेलना कार्य की डर से चीन सरकार ने उन्हें घर में नज़रबन्दी और चीनी नीतियों के खिलाफ़ आलोचना करने के लिए सुनवाई में रखा गया। उन्हें उनके सभी पदों से बर्खास्त कर दिया और चीनी सरकार द्वारा सार्वजनिक अपमान और यातना के रूप में इस्तेमाल किये जाने वाला एक संघर्ष सत्र थामजिंङ के अधीन रखा गया था। दिसम्बर 1964 में पेंछेन लामा को बीजिंग लाया गया और उन्हें घर में नज़रबन्द रखा गया।

सांस्कृतिक क्रान्ति के शुरुआत में उनकी स्थिति अधिक गम्भीर होने लगा। अगस्त 1966 की एक शाम को चीनी लाल सेना के एक गिरोह ने पेंछेन लामा जी के घर में घुसकर उन्हें हिरासत में लिया। उन्हें दण्ड देने वालों ने उनसे पूछताछ की, उसकी भुजाओं को पीठ के पीछे कसकर कपड़ों से बाँध दिया जिसके कारण उनके मांस की गहरा हिस्सा कट गया। उन लोगों ने उन पर थूका और दुर्व्यवहार किया, उसके बाद उन्हें सड़कों पर घुमाया और लाउडस्पीकार से यह एलान किया कि वह सबसे बड़ा प्रतिक्रियावादी गुलाम मालिक और तिब्बत में सबसे बड़ा विश एवं रक्तदाता की आरोप लगाया गया था।[21]

अक्टूबर 1977 तक पेंछेन लामा जी बीजिंग के क़ैद में रहें। बाहरी दुनिया को पेंछेन लामा जी के पुनः वापसी के बारे में पहली बार 26 फरवरी 1978 को पता चला जब चाइना न्यूज एजेंसी ने पेंछेन लामा का बीजिंग में आयोजित होने वाले पाँचवा चीनी राजनीतिक परामर्श सम्मेलन की राष्ट्रीय समिति में उपस्थित होने की रिपोर्ट प्रकाशित किया था। उस समय तक तिब्बत में तिब्बतियों को यह भी पता नहीं था कि पेंछेन लामा जी जीवित है या मृत्यु हो गई।

सन् 1979 को पेंछेन लामा जी को राष्ट्रीय लोग कांग्रेस के उपाध्यक्ष पद के लिए पुनः नियुक्त किये गये थे। उन्होंने चीनी अधिकारियों से तिब्बत की यात्रा के लिए अनुमति माँगी परन्तु उन्हें यह स्वीकृति दो साल बाद मिली। (जुलाई सन् 1983 में पेंछेन लामा जी ने पहली बार सन् 1965 के बाद तिब्बत में वापसी की)। तिब्बत की धर्म एवं संस्कृति के विनाश और दुर्दशा

संघर्ष समय के दौरान जब पेंछेन लामा को चीनी शासन ने सार्वजनिक रूप से शर्मिंदा और अपमानित किया था, 1964

देखकर, पेंछेन लामा जी ने अपने शेष जीवन तिब्बती लोगों की सेवा के लिए समर्पित करने का निर्णय लिया था। पेंछेन लामा जी के अथक प्रयास से सन् 1985 में तिब्बत विश्वविद्यालय का ल्हासा में शुरुआत की थीं।[22] सन् 1987 में पेंछेन लामा जी ने सफलतापूर्वक तिब्बती भाषा को तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के आधिकारिक भाषा के रूप में कानून पारित की थी।[23] साथ ही उन्होंने तिब्बती भाषा में शिक्षा अध्ययन करने के लिए समय सारणी परिचय दीं। उसी वर्ष पेंछेन लामा जी ने वरिष्ठ तिब्बती बौद्ध लामाओं के लिए एक स्कूल का बीजिंग में स्थापना की और तिब्बत विकास निधि नामक प्रथम गैर सरकारी संस्था का तिब्बत में शुरू की थी। यह संस्था विशेष रूप से तिब्बत में विकास परियोजनाएं हेतु विदेशी सहायता आकर्षण के लिए स्थापित किया गया था।[24]

मार्च 1987 में बीजिंग में आयोजित राष्ट्रीय लोग कांग्रेस की तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के लिए स्थाई समिति की बैठक के दौरान पेंछेन लामा जी ने चीनी शासन द्वारा तिब्बत में नीति विशेषकर तिब्बतियों की शिक्षा, आर्थिक विकास, जनसंख्या हस्तान्तरण तथा भेदभावपूर्ण व्यवहार पर खुलकर आलोचना किया था। उन्होंने कहा कि पिछले बीस सालों से तिब्बत में चीनी नीतियाँ अति हानिकारक रहा है और इन नीतियों से तिब्बतियों पर आज भी गहरा प्रभाव पड़ रहा है।[25] उन्होंने तिब्बत में बड़ी संख्या में चीनी नौकरशाहों को नियुक्त करने तथा तिब्बत में चीनी प्रवासों को प्रोत्साहित करने की चीनी नीति का जमकर हमला की थीं। इस भाषण में उन्होंने तिब्बत में चीनी नीति विशेष रूप से चीनी शासन द्वारा तिब्बत में बिगड़ती शिक्षा की स्थिति और तिब्बती भाषा को नज़रअन्दाज करने की हर पहलू पर जमकर आलोचना की हैं।[26]

28 जनवरी 1989 को 50 वर्ष के आयु में पेंछेन लामा जी का टाशि ल्हुन्पो मठ में निधन हुई थीं। अधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार पेंछेन लामा जी को दिल का दौरा पड़ने से निधन हुई है। फिर भी पेंछेन लामा जी के क़रीबी मित्र और सलाहकार छुल्ट्रिम तेरसे तथा कई लोगों का यह मानना है कि उन्हें ज़हर देकर मारा गया है।[27] सबसे अधिक संभावना यह है कि वह चीन सरकार के खुलकार आलोचना करने वाला व्यक्ति थे। पाँच दिन पहले सरकारी और

धार्मिक नेताओं के बीच हुए एक उच्च स्तरीय बैठक के दौरान उन्होंने यह सुझाव दिये थे कि कुछ नीति-निर्माता सांस्कृतिक क्रान्ति के समय की कई ग़लतियों को दुबारा दोहरा रहा हैं। और कहा कि तिब्बत के मुक्ति के बाद से तिब्बत में विकास हुआ हैं लेकिन वास्तव में इस विकास की लाभ से कई गुना ज्यादा नुकसान हुआ है।[28]

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि 10वें पेंछेन लामा जी तिब्बती राष्ट्रवादी थे और वह तिब्बत मुद्दे के लिए शहीद हुए थे। उन्हें चीन सरकार ने अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने से वञ्चित किया, एक दशक से अधिक समय के लिए

संघर्ष के दौरान जब पेंछेन लामा को चीनी शासन ने सार्वजनिक रूप से शर्मिंदा और अपमानित किया था, 1966

क़ैद और अपमानित किया गया, फिर भी वह तिब्बत में माओ की नीति के सबसे कठोर और साहसी आलोचक रहे थे।

तिब्बती बौद्ध उच्च शिक्षा संस्थान के उद्घाटन, 1987

10वें पेंछेन लामा, लोबसंग छोक्यि ग्ञालछ़ेन

70 हज़ार अक्षरों की याचिका

दसवें पेंछेन लामा जी की 70 हजार अक्षरों की याचिका-जिसे माओ चे़तुंग ने बताया था "एक ज़हर भरा तीर जो पार्टी को निशाना बनाकर प्रतिक्रियावादी सामंती अधिपतियों द्वारा छोड़ा गया है",[29] निस्सन्देह तिब्बत में चीन सरकार की नीतियों की सबसे प्रभावी और तीखी आलोचना है। इस दस्तावेज़ का आधार तब तैयार हुआ जब 10वें पेंछेन लामा साल 1959 से 1962 के बीच विनाशक 'ग्रेट लीप फॉरवर्ड अभियान के दौरान समूचे तिब्बती इलाकों और साथ ही साथ शिंजियांग तथा दक्षिण चीन में जाँच वाले दौरे पर गये थे। साल 1962 में चीनी प्रधानमंत्री चाउ एनलाई को दी गई इस याचिका का मूल शीर्षक था, "तिब्बत और अन्य तिब्बती क्षेत्रों में जनता की पीड़ा पर एक रिपोर्ट और इस बारे में सुझाव कि सम्मानित प्रधानमंत्री चाउ के द्वारा केन्द्रीय समिति भविष्य में क्या कार्य कर सकती है।

"पेंछेन लामा जी की याचिका में जो चीज़ साफ़ नज़र आ रही थीं वह यह कि, "उनकी याचिका सामयिक चीन और तिब्बत की वास्तविकताओं से एक निर्भीक सामना और प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित थीं, सीधे घटनास्थलों के प्रेक्षण और कठोर अनुभवजन्य विश्लेषण पर...यह तिब्बत में नीतिगत बदलाव का एक मज़बूत तर्क और दमदार तरीक़े से मामला रखता है, तिब्बत की सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक दशा के एक आलोचनात्मक विश्लेषण के सहारे। यह चीन की संवैधानिक गारंटी और मार्क्सवाद की वैचारिक वैधानिकता के सहारे, जिसे कम्युनिस्ट प्रशासन के अधिकारियों के लिए ख़ारिज करना कठिन था, तिब्बती जनता

के अधिकारों और हितों की रक्षा करता है।"[30]

अचरज की बात नहीं है, चीन सरकार ने इस याचिका को एक सरकारी गोपनीय कागज़ की तरह दफ़ना दिया। इस याचिका की विषय-वस्तु के बारे में साल 1996 तक रहस्य बना रहा, उस साल लंदन स्थित एक तिब्बत सूचना नेटवर्क को इसकी एक कॉपी मिली और उसने इसका अंग्रेजी अनुवाद पेश किया। नीचे इसकी सामग्री के विषयवार मुख्य अंश दिए गए हैं।

धर्म के विनाश पर:

लोकतांत्रिक सुधारों से पहले तिब्बत में 2500 बड़े, मध्यम और छोटे मठ थे, लेकिन लोकतांत्रिक सुधारों के बाद सरकार द्वारा सिर्फ 70 मठ ही अस्तित्व में बनाए रखे गए। यह मठों की संख्या में 97 फीसदी की भारी कमी थी...समूचे तिब्बत में पहले क़रीब 1,10,000 भिक्षुओं और भिक्षुणियाँ रहते थे। इनमें से संभवतः 10,000 भागकर विदेश चले गए और वहाँ क़रीब 1,00,000 बचे रहे। लेकिन लोकतांत्रिक सुधार पूरे होने के बाद मठों में रहने वाले भिक्षुओं और भिक्षुणियों की संख्या महज़ 7,000 रह गई, जो पहले के मुकाबले 93 फीसदी कम था।

"जिनके पास धार्मिक ज्ञान है वे लोग धीरे-धीरे मृत्यु हो जाएगा और धार्मिक कार्य ठप पड़ रहे हैं, ज्ञान अगली पीढ़ी तक बाँटा नहीं जा पा रहा, इस बात को लेकर चिन्ता है कि प्रशिक्षण देने के लिए नए लोग नहीं हैं, इस तरह हम देख रहे हैं कि बौद्ध धर्म खात्मा की ओर है जो कि कभी तिब्बत में फला-फूला और जिसने शिक्षा और प्रबोधन का प्रसार किया है। यह ऐसी चीज़ है जो मैं और 90 फीसदी से ज्यादा तिब्बती नहीं सहन कर सकते।

मठों में लोकतांत्रिक सुधार करने के दौरान कई ऐसे कदम उठाए गए जो इन नीतियों के खिलाफ़ थे, इनकी वजह से मठों की हालत इतनी बुरी हो गई कि उसे बयान नहीं किया जा सकता, धर्म का भविष्य दारुण अवस्था में चला गया और पंथनिरपेक्ष लोगों का वास्तव में कोई धार्मिक जीवन नहीं रह गया। नागरिकों का धार्मिक विश्वास का अधिकार पार्टी की नीतियों में समाहित हो गया था और राज्य का संविधान या तो पक्षपाती था या सिर्फ़ नाम के लिए था।"

चीनी कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं द्वारा दुर्व्यवहार परः

"कुछ खास क्षेत्रों में न केवल कम्युनिस्ट पार्टी के काडर या कार्यकर्ताओं का रवैया हमारे धर्म या राष्ट्रीयता के लिए अच्छा नहीं था, बल्कि एक दौर तो ऐसा भी था, जब उन्होंने खुलेआम और अनैतिक ढंग से क्विंघई और गांजी के तिब्बती भाषा के अख़बारों में बौद्ध धर्म और शाक्य मुनि के अशुद्ध तथा ग़लत स्वभाव के बारे में कई अपरिपक्व और निरर्थक विधर्मी विचार प्रकाशित किये...जब ऊँचे स्तर के काडर सुधारों के तरीक़ों के बारे में बात करते थे, तो वे इस बात को लेकर काफ़ी स्पष्ट थे कि उनका शान्तिपूर्ण तरीक़ा क्या है...धीरे-धीरे आगे बढ़ना, कठोर सीमाएं, लक्ष्यों का संरक्षण, जो कि लोगों के लिए सन्तोषजनक था। लेकिन जब यह नीचे की तरफ़ बढ़ा तो प्रत्येक स्तर में तरीक़ा हिंसक होता गया, और काफ़ी बदलाव आ गया, जैसे वे तेज़ गति चाहते थे और चीज़ों को लापरवाही से करते थे, सीमाएं काफ़ी धुँधली हो गईं और संरक्षण अपर्याप्त था।

"सच तो यह है कि किसी तरह का विद्रोह नहीं हुआ, फिर भी कार्यकर्ता जब लोगों का दमन करना चाहते, तो वे उन पर हमले करते, ग़लत आरोप लगाकर और उनको कलंकित करते है यह पहली बात है। दूसरी बातः जो लोग अपने बौद्ध धर्म के पालन और मानवता की खुशी के लिए धर्मग्रन्थों के पाठ के लिए जमा होते थे, उन्हें भी क्रान्ति के खिलाफ़ बताया गया, उनका दमन किया गया और उन पर हमला किया गया। तीसराः कार्यकर्ता न तो कोई जाँच करते थे और न ही अध्ययन, बस वह सिर्फ़ मान लेते थे, इस बेबुनियाद अफ़वाह को कि 'विद्रोह होने जा रहा है' और 'विद्रोह हो चुका है' और वे इसका रक्तरंजित तरीके से दमन करते थे और हमले करते थे। ये तीनों चीज़ें पूरी तरह से निरर्थक थीं और काफ़ी अनाड़ीपन वाली थी।"

अकाल परः

"...तिब्बतियों की मौजूदा जनसंख्या में साफ़ तौर से भारी गिरावट आई है। यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि यह न सिर्फ तिब्बती राष्ट्रीयता के फलने-फूलने के लिए नुकसानदेह है, बल्कि यह तिब्बत की मौजूदा राष्ट्रीयता के जारी अस्तित्व के लिए भी काफ़ी ख़तरा हैं, जो कि मौत के कगार पर खड़ी है।"

"अनाज की मात्रा उनका पेट भरने के लिए भी काफ़ी नहीं थी, जिनकी न्यूनतम आवश्यकताएं हैं, कड़वाहट और भूख की आग बढ़ती गई और इसलिए वसा

के टुकड़े, अनाज की भूसी आदि जो पहले तिब्बत में घोड़ों एवं गधों, सांड एवं बैलों आदि के लिए चारा होते थे, उनका मिलना दुर्लभ हो गया और इन्हें पौष्टिक एवं सुगंधित खाद्य पदार्थ माना जाने लगा। इसी तरह, भोजन तैयार करने की विवशता और एक दिन की भूख एवं कड़वाहट को दूर करने के लिहाज़ से कैन्टीन्स के समझदार लोग काफ़ी घास इकट्ठा करने के साथ ही, जो काफ़ी हद तक खाने योग्य नहीं होता था, पेड़ों के छाले, पत्तियाँ, घासों के जड़ और घासों के बीज जैसी ऐसी चीज़ें इकट्ठा करने लगे, जो कि वास्तव में खाने लायक नहीं होते थे। इसको प्रसंस्कृत करने के बाद वे इस कुछ खाद्य पदार्थों के साथ मिलाते थे, इसे सुअरों के भोजन जैसा पतला मांड की तरह बनाते थे और इसे लोगों को खाने के लिए देते थे, इसके बावजूद यह उन्हें सीमित मात्रा में मिल पाता था और इससे उनका पेट नहीं भरता था...कई जगहों पर बहुत से लोग भूख से मर जाते थे, क्योंकि उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं होता था। कई पूरे के पूरे परिवार भूख से काल के गाल में चले गए। मृत्यु दर काफ़ी ज्यादा थी। ज्यादातर असामान्य मौतें भोजन के अभाव में ही होती थीं और वास्तव में इन सबको भुखमरी की श्रेणी में ही रखना होगा।”

निष्कर्षः

“इस अवसर पर, मैं अपने किसी भी व्यक्तिगत उद्देश्य को परे रखता हूँ और साहस के साथ इस गम्भीर रिपोर्ट को पेश करता हूँ, जो कि एक अच्छी और महत्वपूर्ण चीज़ है जो मैंने इतिहास में किया है। मैंने यह प्रण लिया है कि भविष्य में मैं निश्चित रूप से पार्टी और लोगों के लिए सिर्फ़ अच्छी चीज़ें करूँगा और निश्चित रूप से अपने इतिहास में ऐसा कोई निशान नहीं रहने दूँगा जो कि कठोर मेहनत करने वाले और बहादुर तिब्बती राष्ट्रीयता के एक वंशज के रूप में मेरी प्रतिष्ठा पर कोई दाग लगाए...मैं आपसे अनुरोध करूँगा कि उपरोक्त चीज़ों पर विचार करते समय उदारता और पवित्र एवं शुद्ध भावना दिखाएं।”

11वें पेंछेन लामा की तलाश

जनवरी 1989 में 10वें पेंछेन लामा जी के निधन ने एक अभूतपूर्व हालात को जन्म दिया। तिब्बत में साल 1959 में चीनी कब्ज़े के बाद यह ऐसा पहली बार था, जब तिब्बत के सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक संस्था में से एक, पेंछेन लामा जी के पुनर्जन्म की तलाश करनी थीं। तिब्बत के सबसे सम्मानित पदों में से एक अगले पेंछेन लामा जी की निश्चित रूप से तिब्बती जनता को प्रभावित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका होने वाली थीं। इस तथ्य को देखते हुए कि 10वें पेंछेन लामा जी के अप्रत्याशित निधन की वजह से "चीन के सामने भी तिब्बत में कोई विश्वसनीय हस्ती नहीं बची, ऐसे समय में जब ल्हासा में लगातार प्रदर्शन हो रहे थे और चीन सरकार तिब्बती राष्ट्रवादियों द्वारा अपने शासन के प्रति एक गम्भीर, यहाँ तक कि अभूतपूर्व चुनौती का सामना कर रही थी,"[31] यह वास्तव में काफ़ी अहम अवसर था।

चीन सरकार ने तत्काल ही यह दावा किया कि 11वें पेंछेन लामा जी को चुनने का अधिकार उसके पास है। उनके लिए "पेंछेन लामा की पहचान की पुष्टि करने का मुख्य राजनीतिक मूल्य यह था कि तिब्बत पर अतीत और वर्तमान में चीन का दावा प्रदर्शित किया जाए।"[32] प्रधानमंत्री ली पेंग ने यह ऐलान किया कि "चुनाव प्रक्रिया में किसी बाहरी को दखल देने का अधिकार नहीं दिया जाएगा",[33] यह एक ऐसा सन्देश था जिसका साफ़तौर से लक्ष्य परम पावन दलाई लामा जी थे। राज्य परिषद ने एक तलाश समिति का गठन किया और एक प्रतिष्ठित भिक्षु तथा टाशि

जड्रेल रिन्पोछे

टाशि ल्हुनपो मठ के अध्यक्ष जड्रेल रिन्पोछे को इस समिति का अगुआ बनाया। हालाँकि, उन्होंने यह भी ऐलान किया कि 11वें पेंछेन लामा जी के बारे में अन्तिम पुष्टि चीन सरकार द्वारा ही की जाएगी।[34]

बाकी दुनिया के लिए यह विचार ही वास्तव में एक व्यावहारिक मज़ाक जैसा लग रहा था कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी पुनर्जन्म के मामले देख रही है-तिब्बती बौद्ध धर्म की एक परम्परा जो तेरहवीं सदी से चली आ रही हैं। ये वही लोग थे जिन्होंने मठों को नष्ट किया था और धार्मिक दस्तूर पर प्रतिबन्ध लगाए थे, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का कोई भी सदस्य धर्म में विश्वास नहीं कर करता था। फिर भी वे दावा कर रहे थे कि उनके पास तिब्बती बौद्ध धर्म की सर्वोच्च हस्ती में से एक के चयन का अधिकार है। इस पाखण्ड पर हंसा ही जा सकता था, यदि इसका इस मामले में दूरगामी गम्भीर परिणाम नहीं होता।

इस तरह 11वें पेंछेन लामा जी की तलाश शुरू हुईं। चीनी काफ़ी सुविधाजनक स्थिति में थेः "उन्होंने मठों पर नियंत्रण कर लिया, वे यह तय करते थे कि किसी मठ में कितने भिक्षु रह सकते हैं, वे राजनीतिक अध्ययन पर ज़ोर देते थे, वे मठों की गतिविधियों और उनके हिसाब-किताब को नियंत्रित करते थे।"[35] सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि "जब लालच देने का प्रयास विफल हो जाता है तो छड़ी का इस्तेमाल किया जाता थाः गिरिफ़्तारी, प्रताड़ना, पिटाई और धार्मिक जीवन से वञ्चित करना।"[36] इसके अलावा, इस बारे में परम पावन दलाई लामा जी की आवाज़ को नज़रअन्दाज नहीं की जा सकतीं। भारत में क़रीब तीस साल के निर्वासन के बाद भी परम पावन जी की तिब्बती जनता में क़ाफी प्रतिष्ठा है और उनके प्रति क़ाफी श्रद्धा है। अन्त में कहें तो कोई भी पेंछेन लामा जी तिब्बती जनता के द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा अगर उसे परम पावन दलाई लामा जी से मंजूरी न मिली हो। यह जुलाई 1990 की एक घटना से साफ़ हो गया। ल्हासा के ड्रेपुंङ मठ के भिक्षुओं ने दीवार पर एक पोस्टर लगाया था, जिसमें यह कहा गया था, "स्वर्गीय पेंछेन लामा का पुनर्जन्म हम तिब्बतियों को तभी स्वीकार होगा, यदि यह हमारे गुरु परम पावन दलाई लामा जी द्वारा मंजूर किया गया होगा। हम किसी भी तरह से लाल चीनियों द्वारा नामित व्यक्ति को स्वीकार नहीं करेंगे।"[37]

अप्रैल 1991 में टाशि ल्हुन्पो मठ में समूचे तिब्बत से उच्च लामाओं की एक बैठक बुलाई गई थी। यह विशेष रूप से पेंछेन लामा जी की तलाश के बारे में जड्रेल रिन्पोछे की प्रगति पर एक रिपोर्ट को सुनने के लिए आयोजन किया था। इस बैठक में कई उच्च लामाओं ने चीनी प्रशासन को बताया कि पेंछेन लामा की पुनर्जन्म को मान्यता देने के लिए परम पावन दलाई लामा जी की मंजूरी अनिवार्य है और इसे ख़ारिज नहीं किया जा सकता है।[38] इससे चीनी यह समझने को मजबूर

हो गए कि तिब्बतियों के समर्थन के बिना किसी पेंछेन लामा जी को चुनना उनके लिए निरर्थक है। थोड़े समय की उदारता दिखाते हुए चीनी अधिकारियों ने जड्रेल रिन्पोछे को परम पावन दलाई लामा जी से बात करने की इजाज़त दे दी, लेकिन वे इस बात पर अड़े रहे कि इस बारे में अन्तिम निर्णय करने का अधिकार चीन के पास ही होगा। परम पावन दलाई लामा जी ने जड्रेल रिन्पोछे और तलाश समिति के अन्य सदस्यों को आमंत्रित किया कि वे भारत आकर इस मसले पर चर्चा करें, लेकिन चीन सरकार ने इसकी इजाज़त नहीं दी। साल 1993 में चीन सरकार ने अपना रवैया बदल दिया और इस बात पर पूरी तरह से रोक लगा दी कि जड्रेल रिन्पोछे, परम पावन दलाई लामा जी से किसी प्रकार की सलाह लें। लेकिन तब तक दोनों के बीच संवाद का एक छुपा हुआ रास्ता बन चुका था। जनवरी 1995 में चीनियों को बताए बिना जड्रेल रिन्पोछे ने परम पावन दलाई लामा जी को एक पत्र भेजा, इसके साथ ही एक पैकेट में उन सभी बच्चों की सूची थी, जिन्हें तलाश समिति ने संभावित पुनर्जन्म के लिए विचार में रखा था। पत्र में कहा गया था कि तलाश समिति ने एक ऐसा उम्मीदवार तलाशा है जिन पर उनकी मजबूती से एकमत राय है। परम पावन दलाई लामा जी ने अपने जवाब में तलाश समिति के उस पसन्दीदा विकल्प को सही माना।

14 मई, 1995 को परम पावन दलाई लामा जी ने गेंदुन छोक्यि ञिमा को पेंछेन लामा का 11वां पुनर्जन्म घोषित किया था। चीन सरकार इस चयन प्रक्रिया से पूरी तरह बेसुध थी। इसके जवाब में चीन सरकार ने जड्रेल रिन्पोछे को गिरिफ़्तार कर लिया। 17 मई को गेंदुन छोक्यि ञिमा को भी पूरे परिवार के साथ हिरासत में ले लिया गया, इस तरह यह छह साल का बालक दुनिया का सबसे कम उम्र का राजनीतिक क़ैदी बन गया। चीन सरकार ने यह निर्णय लिया कि दलाई लामा जी की पसन्द को नज़रअन्दाज करते हुए वह अपनी तरह से पुनर्जन्म का चुनाव करेगी। 11 नवम्बर, 1995 को चीन सरकार ने ग्यालछ़ेन नोर्बू को 11वां पेंछेन लामा घोषित कर दिया जो कम्युनिस्ट पार्टी के दो सदस्यों की सन्तान थे। दिसम्बर 1995 में टाशि ल्हुन्पो मठ में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच उनकी ताजपोशी की गई। इस दौरान मठ के चप्पे-चप्पे पर पाँच सौ से ज्यादा सैन्य कर्मी तैनात थे।

फिलहाल ग्यालछ़ेन नोर्बू चीन के बौद्ध संघ के उपाध्यक्ष हैं। साल 2010 में उन्हें चीन के शीर्ष सलाहकार बोर्ड जन परामर्श सम्मेलन की स्थायी समिति में नियुक्त किया गया। इसमें कोई अचरज की बात नहीं है कि वह चीन सरकार और उसकी नीतियों के समर्थक हैं। साल 2008 में चीनी शासन के खिलाफ़ देशव्यापी जनक्रान्ति के दौरान ग्यालछ़ेन नोर्बू ने विरोध प्रदर्शन करने वालों को यह कहते हुए आलोचना की थी कि “हम देश के विघटन और नस्लीय एकता को दमित

तस्वीर देख पाना दुर्लभ बात है। अफवाह तो यह भी है कि चीनी अधिकारी भी ग्यालछ़ेन नोर्बू को 'जिया पेंछेन' यानी फर्जी पेंछेन कहते हैं।

हाल के दिनों में चीन सरकार ने ऐसे कई अहम प्रयास किए हैं कि ग्यालछ़ेन की ख्याति को चीन से बाहर ले जाया जाए। वैसे तो ये प्रयास काफ़ी हद तक विफल रहे हैं, लेकिन ग्यालछ़ेन नोर्बू को किसी तरह की स्वीकार्यता या मान्यता देने का मतलब चीन सरकार के इस प्रयास में भागीदार बनना कि पुनर्जन्म को पहचानने की शताब्दियों पुरानी बौद्ध परम्परा को दूषित किया जाए और इस तरह से तिब्बती जनता के अपने धर्म के पालन के अधिकार पर ख़तरा पैदा होगा।

तिब्बत के 11वें पेंछेन लामा, गेंदुन छोक्यि ञिमा के फोरेंसिक आर्टिस्ट की तस्वीर, अप्रैल 2019

करने वाली सभी गतिविधियों का सख्ती से विरोध करते हैं।"[39] हालाँकि वह तिब्बती जनता में स्वीकार्यता हासिल करने में असफल रहे। यहाँ तक के पेंछेन लामा जी के गृह मठ वाले इलाके शिगाछ़े में भी लोगों के घरों में ग्यालछ़ेन नोर्बू की

11वें पेंछेन लामा को रिहा करने की माँग का संयुक्त राष्ट्र द्वारा किए गए प्रयास का तिथिवार ब्योरा

नवम्बर 1995: पेंछेन लामा जी के मामले को मानवाधिकार अधिकारों के उप-आयोग के 1503 प्रक्रिया (गोपनीय प्रक्रिया) के तहत संचार पर कार्यसमूह के पास भेजा गया। पाँच घण्टे से ज्यादा के विचार के बाद, इस मामले पर आगे किसी कार्रवाई के लायक नहीं समझा गया, खासकर जब समूह के पाँच सदस्यों में से एक चीन के विशेषज्ञ फान गुआओशियांग ने इस पर कड़ी आपत्ति जताई।

1995: कार्यसमूह के ज़बरन या स्वैच्छिक रूप से गायब होने वाले लोगों पर जारी बयान में कहा गया कि, "यह चिन्ता अब भी बनी हुई है कि बच्चा कहाँ है...यह सराहनीय बात होगी यदि चीन सरकार अपने इस बयान के समर्थन में दस्तावेज़ भी पेश करें कि 11वें पंचेल लामा और उनके माता-पिता ने संरक्षण के लिए सरकार से अपील की है और फिलहाल वह सामान्य जीवन जी रहे हैं, उनका स्वास्थ्य पूरी तरह सही है।"

मई 1996: बाल अधिकारों की समिति द्वारा चीन की पहली नियतकालिक समीक्षा के दौरान स्वीडन के श्री थॉमस हैमरबर्ग ने कहा कि समिति इस बात के लिए "चिन्तित है कि दलाई लामा जी ने जिस बच्चे को नया पेंछेन लामा चुना है वह किस हाल में है और आमतौर पर सभी तिब्बती बच्चों की चिन्ता करती है।"

1997: धर्म या विश्वास की स्वतंाता पर गठित विशेष प्रतिवेदक ने यह बताया कि चीन ने यह बयान दिया है कि दलाई लामा जी द्वारा किसी बच्चे को पेंछेन लामा का अवतार घोषित कर देने को वह अवैध मानता है और पेंछेन लामा जी की तलाश के लिए गठित समिति से जड़्रेल रिन्पोछे ने इस्तीफा स्वास्थ्य कारणों से दिया है।

सितम्बर 1998: मानवाधिकारों की उच्चायोग ने ल्हासा का आधिकारिक दौरा किया और चीनी अधिकारियों से पूछा कि पेंछेन लामा जी कहाँ हैं। उन्हें कोई जवाब नहीं मिला।

1999: धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता पर गठित विशेष प्रतिवेदक ने चीन के एक और बयान की जानकारी दी जिसमें उसने इस आरोप से इंकार किया है कि गेंदुन छोक्यि ञिमा को हिरासत में लिया गया है। चीन ने कहा कि "निर्वासित अलगाववादियों ने इस बच्चे के अपहरण का प्रयास किया था जिसके बाद बच्चे और उनके माता-पिता के अनुरोध पर सुरक्षा के कदम उठाए गए हैं।" इस बयान में इस बात की भी जानकारी दी गई है कि जड्रेल रिन्पोछे को "राज्य की एकता और नस्लीय जुड़ाव के लिए ख़तरा पैदा करने तथा तिब्बत की स्थिरता एवं विकास को नुकसान पहुँचाने के लिए" कारावास की सजा दी गई है।

2002: मानवाधिकारों के उच्चायुक्त ने चीन के अपने आधिकारिक दौरे के दौरान गेंदुन छोक्यि ञिमा और उनके माता-पिता के गायब रहने के मामले को उठाया। अधिकारियों का कहना था कि यह बच्चा स्वस्थ है और उनके माता-पिता निजता चाहते हैं।

9 जून 2005: धर्म या विश्वास की आज़ादी पर गठित विशेष प्रतिवेदक ने एक पहल की कि "पेंछेन लामा के गायब होने की दसवीं वर्षगांठ पर ज़ोर दिया जाए।"

सितम्बर 2005: बाल अधिकार पर समिति द्वारा चीन की नियतकालिक समीक्षा के दौरान तिब्बती प्रतिनिधि के रूप में टाशि ल्हुनपो मठ के केलखांग रिन्पोछे जैसे वरिष्ठ प्रतिनिधि भी शामिल हुए। अपने निष्कर्ष में समिति ने कहा कि उसने "चीनी अधिकारियों से यह कहा है कि किसी स्वतंत्र विशेषज्ञ को चीन में जाने और यह पुष्टि करने की इजाज़त दी जाए कि गेंदुन छोक्यि ञिमा ठीक-ठाक हैं और इस दौरान उनकी तथा उनके माता-पिता की निजता का पूरा ध्यान रखा जाए।"

मई 2006: जबरन या स्वैच्छिक रूप से गायब होने वाले लोगों पर गठित कार्यसमूह ने इस बारे में एक बयान जारी किया कि उसकी बैठक में किस तरह से पेंछेन लामा के मामले पर चर्चा की गई और उसने कहा कि, "यह उसी दिन हुई जिस दिन पेंछेन लामा का 17वां जन्मदिन था जो कि 6 साल की उम्र में गायब हो गए थे।"

9 मई 2007: धार्मिक या विश्वास की आज़ादी पर गठित विशेष प्रतिवेदक ने मानवाधिकार परिषद के सातवें सत्र में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुये कहा कि "चीन सरकार ने महत्वपूर्ण पुनर्जन्म की पहचान और प्रशिक्षण के मामलों में दख़ल दिया है ताकि तिब्बती समाज में इन महत्वपूर्ण हस्तियों की राजनीतिक निष्ठा पर नियंत्रण हासिल किया जा सके।"

17 जुलाई 2007: चीन सरकार ने धार्मिक या विश्वास की आज़ादी पर गठित विशेष प्रतिवेदक को लिखे एक पत्र में कहा कि गेंदुन छोक्यि ञिमा "एक पूरी तरह साधारण बच्चे हैं और स्वास्थ्य बहुत बढ़िया

है। वह एक सामान्य, खुशहाल जीवन जी रहे हैं और एक अच्छी शिक्षा और सांस्कृतिक रूप से लालन-पालन उन्हें मिल रहा है...यह आरोप कि वह अपने माँ-बाप के साथ गायब हैं और उनका कोई पता नहीं है, वास्तव में सच नहीं है।"

12 दिसम्बर 2008: प्रताड़ना के खिलाफ़ गठित समिति ने अपने निष्कर्ष में यह सुझाव दिया है कि "चीन को जबरन गायब करने की घटना को रोकने और प्रतिबन्धित करने तथा गेंदुन छोक्यि ञिमा सहित गायब होने वाले लोगों की हालत पर प्रकाश डालने के लिए सभी ज़रूरी कदम उठाने चाहिए।"

8 अप्रैल 2011: जबरन या स्वैच्छिक रूप से गायब होने के मामलों पर गठित कार्यसमूह ने एक सार्वजनिक बयान जारी कर पेंछेन लामा जी के मामले पर चिन्ता जताई, जो कि "16 साल पुराना मामला है।"

सितम्बर 2013: बाल अधिकारों पर गठित समिति (सीआरसी) द्वारा चीन की तीसरी नियतिकालिक समीक्षा के दौरान चीनी प्रतिनिधि श्री झाओ ची ने बताया कि "गेंदुन छोक्यि ञिमा किसी अन्य साधारण बच्चे की तरह ही हैं," जब सीआरसी की अध्यक्ष सुश्री सैंडबर्ग ने सवाल किया। अपने निष्कर्ष में समिति ने कहा कि "वह इस बात से काफ़ी व्यथित है और चीन को तत्काल एक स्वतंत्र विशेषज्ञ को गेंदुन छोक्यि ञिमा से मिलने देना चाहिए और उनकी सेहत तथा हालत की पुष्टि कर देनी चाहिए।"

सितम्बर 2018: मानवाधिकार परिषद के 39वें सत्र में जबरन और स्वैच्छिक रूप से गायब लोगों पर गठित संयुक्त राष्ट्र समूह ने यह दोहराया कि "चीन में हिरासत में लिए गए लोगों पर वह चिन्ता जताता है... चीन सरकार से यह आग्रह करता है कि इस बात का खुलासा करें कि ऐसे सभी हिरासत में लिए गए लोग कहाँ हैं और उनकी क्या हालत है।"

अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का बयान

साल 2020 ग्यारहवें पेंछेन लामा जी और उनके परिवार तथा जड्रेल रिन्पोछे के अपहरण का 25वां वर्ष है। 25 अप्रैल को पेंछेन लामा गेंदुन छोक्यि ञिमा के 31वें जन्मदिन पर केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन ने 13 देशों के तिब्बत कार्यालय के माध्यम से एक महीने का वैश्विक हिमायत अभियान शुरू किया ताकि गेंदुन छोक्यि ञिमा की रिहाई की आवाज़ तेज़ हो और चीन पर इस बात के लिए दबाव बने कि वह इस बारे में स्पष्ट सूचना दे कि गेंदुन छोक्यि ञिमा की मौजूदा हालत कैसी है और वह कहाँ हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय से इस अभियान को ज़बरदस्त समर्थन मिला। नीचे इस अभियान से जुड़े कुछ बयान और पत्र दिए गए हैं।

PALAIS DES NATIONS • 1211 GENEVA 10, SWITZERLAND

Mandates of the Working Group on Enforced or Involuntary Disappearances; the Working Group on Arbitrary Detention; the Special Rapporteur in the field of cultural rights; the Special Rapporteur on minority issues; and the Special Rapporteur on freedom of religion or belief

REFERENCE:
AL CHN 12/2020

2 June 2020

Excellency,

We have the honour to address you in our capacities as Working Group on Enforced or Involuntary Disappearances; Working Group on Arbitrary Detention; Special Rapporteur in the field of cultural rights; Special Rapporteur on minority issues; and Special Rapporteur on freedom of religion or belief, pursuant to Human Rights Council resolutions 36/6, 42/22, 37/12, 34/6 and 40/10.

In this connection, we would like to bring to the attention of your Excellency's Government information we have received concerning **the continued enforced disappearance of Gedhun Cheokyi Nyima, and the regulation of reincarnation of Tibetan living Buddhas against the religious traditions and practices of the Tibetan Buddhist minority.** The 17 May 2020 marked 25 years since the disappearance of Gedhun Cheokyi Nyima.

The case of Gedhun Cheokyi Nyima has previously been raised with your Excellency's Government by Special Procedures mandate holders in CHN 13/2005 and CHN 12/2007. We thank your Excellency's Government for the replies received to these communications.

We would also like to recall that the case of Gedhun Cheokyi Nyima has also been treated under the humanitarian mandate of the Working Group on Enforced or Involuntary Disappearances.

Furthermore, Special Rapporteurs on freedom of religion or belief have raised concerns on the measures taken by the authorities to manage the search, identification and the reincarnation of Buddhist Lamas in 1991 (E/CN.4/1992/52, para 22), 1996 (E/CN.4/1996/95, para 40) and 2006 (E/CN.4/2006/5/Add.1, paras 94-95).

According to the information received:

On 14 May 1995, Mr. Gedhun Cheokyi Nyima, then six years of age, was recognized as the 11th reincarnation of the Panchen Lama by the Dalai Lama. Shortly after this date, Mr. Nyima and his parents were taken away from their village by members of the Chinese Government. The 17 May 2020 marked 25 years since the disappearance of Gedhun Cheokyi Nyima.

The Government of China has confirmed that he was taken away with his family but has refused to provide precise information on his fate and whereabouts despite

multiple requests. The Government initially indicated he was being held in "government protection," and later that he was living a normal life. During this period, he has reportedly been deprived of the religious education in Tibetan Buddhism.

Following the disappearance of Mr. Gedhun Cheokyi Nyima, the Chinese Government attempted to nominate and appoint their preferred choice of individual as the eleventh Panchen Lama. Moreover, the authorities also attempted to regulate the appointment of Tibetan religious leaders, which went against the intrinsic beliefs and religious traditions of Tibetan Buddhists. In 2007, the Government issued the "State Religious Affairs Bureau Order No.5 (Bureau Order)" that specifically laid down measures in managing the reincarnation of Tibetan living Buddha. In article 2 of Bureau Order, it was stressed that "living Buddha reincarnations should respect and protect the principles of the unification of the state, protecting the unity of the minorities, protecting religious concord and social harmony, and protecting the normal order of Tibetan Buddhism". In articles 3 and 4, the Bureau Order set the conditions for the application of reincarnation of living Buddha and also granted authority to local Governments to decide if a reincarnation is permissible. In the rest of the Bureau Order, it detailed various procedures for receiving the Buddhist Association of China's opinion and the State's permission or approval for reincarnation.

In 2016, the Chinese Government published an online database of the State-approved Tibetan Buddhist reincarnations with over 1300 biographies of living Buddhas residing in the country as provided by the Buddhist Association of China. The regulation of reincarnation is enhanced subsequently in article 36 of the Religious Affairs Regulations 2017, which provides that: "the succession of living Buddhas in Tibetan Buddhism is to be conducted under the guidance of Buddhist groups and in accordance with the religious rites and historical conventions, and is to be reported for approval to the religious affairs department of people's governments at the provincial level or above or to a people's government at the provincial level or above". Many Tibetan Buddhists have expressed their concerns about the regulation of reincarnation as it undermines the Tibetan religious traditions and practices while such regulation allow the State to interfere in the choice of their religious leaders. Furthermore, there is fear that the Chinese authority will identify and appoint the successor of the current (fourteenth) Dalai Lama against the Tibetan traditions and the wish of Tibetan Buddhist communities.

Without prejudging the accuracy of this information, we express grave concern at the continued refusal by the Government of China to disclose precisely the whereabouts of Gedhun Cheokyi Nyima. We are also particularly concerned that the regulation of reincarnation of Tibetan living Buddhas may interfere and possibly undermines, in a discriminatory way, the religious traditions and practices of the Tibetan Buddhist minority.

Should these allegations be confirmed, they would contravene international human rights law provisions, such as the prohibition against discrimination, the right to recognition as a person before the law and to its equal protection without discrimination, the right not be deprived arbitrarily of one's liberty, the right to freedom of thought, conscience and religion and to freely participate in cultural life in accordance with articles 2, 3, 6, 7, 9, 18 and 27 of the Universal Declaration of Human Rights, and article 15 of the International Covenant on Economic, Social and Cultural Rights. The continued enforced disappearance of Mr. Gedhun Cheokyi Nyima for the past 25 years contravenes several articles of the United Nations Declaration on the Protection of All Persons from Enforced Disappearances including articles 2 and 7.

The disappearance of Mr. Gedhun Cheokyi Nyima has been raised with your Excellency's Government multiple times by Special Procedures mandate holders. The UN Committee on the Rights of the Child (CRC) has also requested China to allow an independent expert to visit Mr. Gedhun Cheokyi Nyima to confirm his whereabouts and verify the fulfilment of his rights (CRC/C/SR.299 and CRC/C/CHN/CO/3-4). We note that your Excellency's Government has expressed on several occasions its support for the international community's efforts to eliminate and prevent enforced disappearances, including at the Human Rights Council. **We thus reiterate our demand for your Excellency's Government to provide prompt and detailed information on Mr. Gedhun Cheokyi Nyima's whereabouts and we endorse the CRC's recommendation to allow an independent monitor to visit him to confirm his whereabouts and the extent to which he is able to enjoy and exercise his rights. We also appeal to your Excellency's Government to ensure that Tibetan Buddhists are able to freely practice their religion, traditions and culture without interference.**

In connection with the above alleged facts and concerns, please refer to the **Annex on Reference to international human rights law** attached to this letter which cites international human rights instruments and standards relevant to these allegations.

As it is our responsibility, under the mandates provided to us by the Human Rights Council, to seek to clarify all cases brought to our attention, we would be grateful for your observations on the following matters:

1. Please provide any additional information and/or comment(s) you may have on the above-mentioned allegations.

2. Please provide prompt and detailed information on the fate and whereabouts of Mr. Gedhun Cheokyi Nyima.

3. Please explain how the regulation of reincarnation of living Buddhas is compatible with the protection of freedom of religion or belief and the protection of religious minorities without discrimination under international human rights law.

This communication and any response received from your Excellency's Government will be made public via the communications reporting website within 60 days. They will also subsequently be made available in the usual report to be presented to the Human Rights Council.

We may publicly express our concerns in the near future in this case. We have been communicating repeatedly with the Government of China to clarify the fate and whereabouts of Mr. Gedhun Cheokyi Nyima for the past 25 years, thus far, without a satisfactory response. We also believe that the regulatory framework applied to religious communities, should not interfere or undermine the right of these communities to follow their beliefs and traditions. Any public expression of concern on our part will indicate that we have been in contact with your Excellency's Government's to clarify the issue/s in question.

Please accept, Excellency, the assurances of our highest consideration.

Luciano Hazan
Chair-Rapporteur of the Working Group on Enforced or Involuntary Disappearances

Elina Steinerte
Vice-Chair of the Working Group on Arbitrary Detention

Karima Bennoune
Special Rapporteur in the field of cultural rights

Fernand de Varennes
Special Rapporteur on minority issues

Ahmed Shaheed
Special Rapporteur on freedom of religion or belief

LIETUVOS RESPUBLIKOS SEIMO NARYS ANDRIUS NAVICKAS.
Gedimino pr. 53, 01109 Vilnius Tel. (8 5) 239 6550 El. p. Andrius.Navickas@lrs.lt

---

LR Prezidentui Gitanui Nausėdai
LR Užsienio reikalų ministrui Linui Linkevičiui 2020-05-07

DĖL JAUNIAUSIO PASAULYJE POLITINIO KALINIO LIKIMO

2020 m. gegužės 17 d. visame pasaulyje bus minimos 25-osios Gedhun Choekyi Nyimos, kuris plačiau žinomas kaip XI-asis Pančen Lama, pagrobimo metinės. Jis įvardijamas jauniausiu politiniu kaliniu, kuris pradingo dar 1995 m., tepraėjus trimis dienomis, kai ištremtasis Tibeto dvasinis lyderis Dalai Lama oficialiai šešiametį berniuką iš Vidurio Tibeto paskelbė antruoju pagal rangą asmeniu Tibeto budistinėje tradicijoje.

Pančen Lama buvo pagrobtas kartu su tėvais, buvo suimtas, ir jo buvimo vieta yra viena stropiausiai slepiamų Kinijos valstybinių paslapčių.

Tradiciškai Pančen Lama ir Dalai Lama yra neatsiejamai susiję. Po vieno iš jų mirties, kitas dvasinis lyderis atpažįsta ir formaliai paskelbia apie naują persikūnijimą, auklėja jį ir padeda formuoti tapatybę. Tačiau Kinijos režimas brutaliai įsikišo į Tibeto budizmo tradiciją, ėmėsi veiksmų, kurie tegali būti traktuojami kaip drastiškas žmogaus teisių pažeidimas.
Beje, Kinijos ateistinis režimas griebėsi manipuliacijų - nusprendė nurodyti Tibeto budistams, kas yra jų „tikrasis“ dvasinis lyderis ir juo paskelbė berniuką, užaugusį komunistinėje šeimoje. Jis Tibete neturi autoriteto ir vadinamas „Kinų Pančenu“.

Įvairios tarptautinės organizacijos ne kartą klausė Kinijos apie Gedhun Choekyi Nyimos ir jo šeimos likimą, tačiau kiekvieną kartą į tai būdavo atkertama ciniškais melais. 2019 m. rugsėjo mėnesį Jungtinių Tautų darbo grupė, tirianti žmonių dingimus ir pagrobimus, dar kartą paklausė Kinijos LR apie šio asmens padėtį. Kinija atsakė, kad Gedhun Choekyi Nyima gavo tinkamą nemokamą išsilavinimą, lankė universitetą ir dabar susirado darbą. Tačiau iki šiol pasaulio visuomenė neturi jokių patvirtintų žinių apie XI Pančen Lamą – ar jis yra gyvas, ir kokia yra jo dabartinė tapatybė. Klausimas tampa dar aštresnis dabar, kai Jo Šventenybė XIV Dalai Lama yra solidaus amžiaus. Nors jis vis dar puikios fizinės formos, visi supranta, kad anksčiau ar vėliau iškils įpėdinio klausimas. Pagal tradiciją, Pančen Lamos vaidmuo čia yra labai svarbus, todėl tibetiečiai su nerimu ir nebe pagrindo mano, kad Kinijos LR čia yra numačiusi veiksmus, kurie toliau griautų Tibeto dvasinę tradiciją.

Šių metų gegužės 17 d., kai minime 25-ąsias Gedhun Choekyi Nyimos pagrobimo metines, jam dabar turėtų būti 31 metai. Tibetiečių vyriausybė tremtyje ir visame pasaulyje veikiančios tibetiečių organizacijos kviečia visuomenę paminėti šią liūdną sukaktį ir priminti Kinijos komunistiniam režimui apie sąžinės kalinį Gedhun Choekyi Nyimą – Tibeto XI Pančen Lamą.

Todėl raginame Lietuvos Respublikos Prezidentą Gitaną Nausėdą, Užsienio reikalų ministrą Liną Linkevičių kreiptis į dabartinę Kinijos valdžią, reikalaujant, kad Tarptautinės žmogaus teisių organizacijos gautų patikimą informaciją apie pasaulio jauniausio politinio kalinio likimą. Tik tiesa gali išlaisvinti ne tik pačią Kinijos valdžią, bet ir visų tarptautinius santykius su šia valstybe.

Dr. Andrius Navickas, LR Seimo narys, Laikinosios solidarumo su tibetiečiais grupės vadovas

14. Mai 2020 Entwurf_15. Mai 2020

Brand/Schwabe/Jensen/Bause: Sofortige Freilassung des Panchen Lama
Entführung des zweithöchsten religiösen Oberhaupts der Tibeter jährt sich am 17. Mai 2020 zum 25. Mal
Gemeinsame Erklärung der menschenrechtspolitischen Sprecher der Fraktionen von CDU/CSU, SPD, FDP und BÜNDNIS 90/DIE GRÜNEN
„Vor 25 Jahren verschleppte die kommunistische Führung Chinas den damals sechsjährigen Panchen Lama, Gedhun Choekyi Nyima, dessen umgehende Freilassung wir fordern. Mit der Entführung und dem inzwischen über zwei Jahrzehnte währenden Freiheitsentzug verstößt der chinesische Staat eklatant gegen Menschenrechte, insbesondere gegen das Menschenrecht auf Leben und Freiheit der Person wie auch gegen die Religionsfreiheit. Die chinesische Regierung ist aufgefordert, dem aus politischen Gründen an einem nicht bekannten Ort festgehaltenen Panchen Lama endlich die Kontaktaufnahme mit der Außenwelt zu ermöglichen, Beobachtern und Beobachterinnen sowie Vertretern und Vertreterinnen der Vereinten Nationen den Zugang zu ihm nicht länger zu verwehren und das Recht des tibetischen Volks, seine religiösen Oberhäupter selbst zu bestimmen, vollständig anzuerkennen.
Das jahrtausendealte, friedfertige Volk der Tibeter mit seinen einzigartigen kulturellen Traditionen und seiner Religion wird systematisch seiner Kultur und seines Landes beraubt. Durch maximalen Druck und systematische Zerstörung oder Zweckentfremdung wichtiger religiöser und kultureller Denkmäler und Gebäude werden die uralten Wurzeln zudem ebenfalls sukzessive zerstört. Auch andere religiöse und ethnische Minderheiten leiden unter massiver Verfolgung und schweren Menschenrechtsverletzungen durch den chinesischen Staat.
Wir befürworten und unterstützen den friedlichen Weg des Dalai Lama und der Tibeterinnen und Tibeter, über ein Miteinander „ohne jede Trennung von China “in einen ernsthaften Dialog zu treten. Diesen offenen Dialog mit den legitimen Vertreterinnen und Vertretern der Tibeter wird das Regime in Peking auf Dauer nicht verweigern können, ohne selbst weiteren Schaden zu nehmen. Ein erster Schritt auf diesem Weg wäre die Freilassung des Panchen Lama.“

English Translation

Brand/Schwabe/Jensen/Bause: Immediate release of the 11th Panchen Lama

Joint declaration by the Spokespersons for Human Rights Policy of the Parliamentary Groups of CDU/CSU, SDP, FDP, Alliance90/The Greens

25 years ago, the Chinese Communist leadership abducted the then six-year-old Panchen Lama, Gedhun Choekyi Nyima. Today, we demand his immediate release.

With the kidnapping and deprivation of liberty for over two decades, the Chinese state blatantly violates human rights, in particular the human right to life, freedom, and religion. The Panchen Lama is still being held in an unknown location without any contact with the outside world. Representatives of the United Nations and other international observers have been denied access to him and his family.

Under the Chinese state, the peaceful people of Tibet, with their unique cultural traditions and religion, are systematically stripped of their identity. Maximum pressure and systematic destruction of important religious and cultural icons gradually destroy the Tibetan culture. Other religious and ethnic minorities are also suffering severe persecution and serious human rights violations by the Chinese state.

We advocate and support the peaceful path of the Dalai Lama and the Tibetans about living together “without any separation from China” to enter into a serious dialogue. This open dialogue with the legitimate representatives of the Tibetans cannot be refused by the regime in Beijing, without taking further damage themselves. The first step on this path would be the release of the Panchen Lama.

PIRÁTSKÁ STRANA | Poslanecký klub Pirátů

Statement by Czech Parliamentary Support Group for Tibet on the 25th Year of Enforced Disappearance of Panchen Lama of Tibet, Gedhun Choekyi Nyima

On the 25th year of enforced disappearance of Tibet's 11th Panchen Lama Gendhun Choekyi Nyima, we, the undersigned members of parliament of Czech Republic, call for his immediate release along with his entire family and other Tibetan political prisoners.

Gedhun Chokeyi Nyima was born on 25 April 1989 in Tibet. He was six-year-old when he was recognized as the 11th Panchen Lama of Tibet by His Holiness the Dalai Lama. Within three days, on 17 May 1995 he and his entire family members were kidnapped by China and till date China has refused to disclose sufficient and satisfactory information about him. Last month, Tibetans were forced to celebrate the 31st birthday of their religious leader, the 11th Panchen Lama without even knowing whether he is alive or not.

This evinces the egregious human rights violations suffered by Tibetans under China. It therefore comes as no surprise that Tibet is consistently ranked as the second least free region in the world and the European Parliament Intergroup on Freedom of Religion or Belief has ranked China as one of the worst violators of religious freedom in the world in 2018. Not just Tibetan Buddhists, even Uighur Muslims and Christians are also facing religious persecution by China.

In light of this, we strongly condemn the enforce disappearance of Gedhun Choekyi Nyima for the last twenty-five-years. It is a tragic milestone evincing the continuous crime being perpetrated by China not only against Gedhun Choekyi Nyima and his family but also against all the Tibetans who are deprived of their religious leader.

We urge our Government, the European Union and the United Nations to take serious note of this gross human rights violations and press China to release Gedhun Choekyi Nyima and his family members and stop China from meddling in the religious practices of the Tibetans including their system of recognition of reincarnations.

František Kopřiva
co-chair of Czech Parliamentary Support Group for Tibet

Co-signed by

Přemysl Rabas, co-chair of Czech Parliamentary Support Group for Tibet, senator
Dana Balcarová, member of parliament
Jan Horník, senator
Lenka Kozlová, member of parliament
Jakub Michálek, member of parliament
Vít Rakušan, member of parliament
Jitka Seitlová, senator
Tomáš Vymazal, member of parliament
Jan Čižinský, member of parliament
Jakub Janda, member of parliament
Tomáš Martínek, member of parliament
Jiří Oberfalzer, senator
Olga Richterová, member of parliament
Ondřej Veselý, member of parliament
Marek Výborný, member of parliament

Česká pirátská strana - Poslanecký klub Pirátů IČO 71339698
Malostranské nám. 7/19, 118 00 Praha 1 - Malá Strana · www.pirati.cz
Transparentní účet u banky FIO č 2100048174/2010

HOUSE OF COMMONS
CHAMBRE DES COMMUNES
CANADA

Rt. Hon. Justin Trudeau, P.C., M.P.
Prime Minister of Canada
Office of the Prime Minister
Ottawa, ON K1A 0G2

Re: 25th anniversary of the disappearance of 11th Panchen Lama - Gedhun Choekyi Nyima

Dear Prime Minister,

We write to you in advance of the 25th anniversary of the disappearance of Gedhun Choekyi Nyima, the 11th Panchen Lama of Tibet, on May 17, 1995. At the time of his disappearance, Gendun Choekyi Nyima was just six years old. Neither he nor his family have been seen or heard from since. Often referred to as the moon to the Dalai Lama's sun, the Panchen Lama is the second most important religious leader within Tibetan Buddhism.

The enforced disappearance of Gedhun Choekyi Nyima and his family members is not just an egregious crime against him and his family, it is also a serious offence to the Tibetan people. It is an interference in sacred traditions of Tibetan Buddhism and sets a dangerous precedent for possible interference in the process of identifying the reincarnations of future Dalai Lamas.

Along with the arbitrary arrest and detention of Tibetan religious leaders, China has recently intensified its application of discriminatory policies with the intention of 'adapting religion to socialism with Chinese characteristics.' Since 2016, Chinese authorities have demolished more than 4700 homes of monks and nuns and have evicted more than 4800 from two major religious institutes – Larung Gar and Yarchen Gar. State authorities have also appointed Communist Party officials to key supervisory positions at such institutes to tighten state control over them.

Since 1995, several governments, including Canadian governments, have requested permission to visit the Panchen Lama in order to verify his safety and well-being. Similarly, efforts by human rights organizations including the UN Committee Against Torture, the UN Committee on the Rights of the Child, as well as Special Rapporteur on Freedom of Religion or Belief, have been unsuccessful. Chinese authorities have consistently denied permission and access.

Therefore we, the undersigned parliamentarians, ask that the Right Honourable Prime Minister:

1. Issue a statement calling on China to release Tibet's 11th Panchen Lama Gedhun Choekyi Nyima and his entire family, and to stop the violation of the religious freedoms of all peoples under its jurisdiction, including Tibetan Buddhists, Uighur Muslims, Falun Gong practitioners and Christians;
2. Urge China to allow an independent fact-finding mission to assess the human rights violations perpetrated against Tibetans in Tibet and other regions in China.

Sincerely,

Garnett Genuis, M.P.
Shadow Minister for Multiculturalism & for Canada-China Relations

Ziad Aboultaif, M.P.
Shadow Minister for Digital Government

Colin Carrie, M.P.
Shadow Minister for Canada-U.S. Relations and the Federal Economic Development Agency for Southern Ontario

Kerry Diotte, M.P.

Hon. Kerry-Lynne Findlay, P.C., M.P.
Shadow Minister for Environment & Climate Change

Jasraj Singh Hallan, M.P.
Deputy Shadow Minister for Multiculturalism

Marty Morantz, M.P.
Shadow Minister for National Revenue

Scott Reid, M.P.

Nelly Shin, M.P.
Deputy Shadow Minister for Canadian Heritage

Karen Vecchio, M.P.
Shadow Minister for Women and Gender Equality

Arnold Viersen, M.P.
Deputy Shadow Minister for Crown-Indigenous Relations

Cathay Wagantall, M.P.
Deputy Shadow Minister for Veterans Affairs

JAMES P. McGOVERN
SECOND DISTRICT, MASSACHUSETTS

CHAIRMAN
COMMITTEE ON RULES

SENIOR DEMOCRATIC WHIP

Congress of the United States
House of Representatives

408 CANNON HOUSE OFFICE BUILDING
WASHINGTON, DC 20515-2102
(202) 225-6101

12 EAST WORCESTER STREET, SUITE 1
WORCESTER, MA 01604
(508) 831-7356

94 PLEASANT STREET
NORTHAMPTON, MA 01060
(413) 341-8700

24 CHURCH STREET, ROOM 27
LEOMINSTER, MA 01453
(978) 466-3552

Statement of U.S. Representative James P. McGovern
Chair of the Congressional-Executive Commission on China and
Co-Chair of the Tom Lantos Human Rights Commission
September 24, 2020

This year we solemnly commemorate 25 years since Gedun Choekyi Nyima, the 11th Panchen Lama, was abducted with his parents and forcibly disappeared. Since then, they have not been seen or heard from by anyone outside of China, making them among the world's longest detained prisoners of conscience.

The Panchen Lama should be freed because no government is justified in doing what the Chinese government has done to him: to kidnap and hold someone, to control his entire life and the lives of his family members, for decades, with no end in sight. He should be freed because the Tibetan Buddhist religious community must have the right to exercise their religious traditions without undue interference, and no one should be punished for adhering to these traditions. He should be freed because he has the right under international law to freedom of thought, conscience and religion, including the right to practice his religion as he chooses. He should be freed because he is still a young man and it's the right thing to do.

The enforced disappearance of the Panchen Lama is an egregious example of the Chinese government's violations of the human rights and religious freedom of Tibetan Buddhists. The Chinese government has asserted control over Tibetan Buddhists' religious traditions, and claims the right to control the selection and recognition of reincarnated religious figures, but no illegitimate law or regulation can deny the right of Tibetan Buddhists to freely choose their own religious leaders without government interference.

The U.S. and the international community must continue to speak out to oppose the official restrictions on the practice of Tibetan Buddhism including control over the process of reincarnation, the demolition of buildings and expulsion of religious practitioners from Larung Gar and Yachen Gar, the implementation of Tibet's new "ethnic unity" regulations, and the use of mass labor transfers in the name of "poverty alleviation" intended in part to "dilute" Tibetan religion. These policies are part of a systematic effort by Chinese authorities to eliminate the distinct religious, linguistic, and cultural identity of the Tibetan people.

This year, let us recommit ourselves to defending human rights in China, Tibet, and around the world. Let us work to free the true Panchen Lama, his family, and all those detained for nonviolent expression of their fundamental rights, immediately and without conditions.

###

PRINTED ON RECYCLED PAPER

★ ★ ★

25th Anniversary of the Panchen Lama's Disappearance

PRESS STATEMENT

MICHAEL R. POMPEO, SECRETARY OF STATE

MAY 18, 2020

Share

The Department of State has made the promotion and protection of religious freedom a priority, especially in China, where people of all faiths face severe repression and discrimination. As part of that mission, on May 17, we marked the 25th anniversary of the disappearance of the 11th Panchen Lama, Gedhun Choekyi Nyima, who has not appeared in public since the PRC government abducted him in 1995, at age six.

The Panchen Lama is one of the most important figures in Tibetan Buddhism with spiritual authority second only to the Dalai Lama. But China's persecution of the Panchen Lama is not unusual. The United States remains deeply concerned about the PRC's ongoing campaign to eliminate the religious, linguistic, and cultural identity of Tibetans, including through the ongoing destruction of communities of worship and learning, such as the Larung Gar and Yachen Gar Buddhist Institutes.

Tibetan Buddhists, like members of all faith communities, must be able to select, educate, and venerate their religious leaders according to their traditions and without government interference. We call on the PRC government to immediately make public the Panchen Lama's whereabouts and to uphold its own constitution and international commitments to promote religious freedom for all persons.

Vyhlásenie poslancov Národnej rady Slovenskej republiky k 25. výročiu násilného zmiznutia tibetského pančenlámu Gedhun Choekyi Nyima

Pri príležitosti 25. výročia násilného zmiznutia 11. tibetského 11. pančenlámu Gendhuna Choekyi Nyimu, podpísaní členovia Národnej rady Slovenskej republiky vyzývame aby bol okamžite prepustený spolu s celou jeho rodinou a ostatnými tibetskými politickými väzňami.

Gedhun Choekyi Nyima sa narodil 25. apríla 1989 v Tibete. Mal šesť rokov, keď ho jeho Svätosť Dalajláma uznal za tibetského 11. pančenlámu. O tri dni neskôr, 17. mája 1995, bol čínskymi úradmi unesený spolu so svojimi rodinnými príslušníkmi. Odvtedy Čína odmietla prezradiť akékoľvek dostatočné a uspokojivé informácie o jeho mieste pobytu. Namiesto toho Čína vymenovala svojho vlastného kandidáta, syna členov komunistickej strany.

Násilné zmiznutie 11. pančenlámu Gedhun Choekyi Nyima, v tom čase najmladšieho politického väzňa na svete, je klasickým príkladom závažného porušovania ľudských práv Tibeťanov v Číne v posledných šiestich desaťročiach.

Prenasledovaniu zo strany čínskej komunistickej vlády nečelia len tibetskí budhisti, ale aj ujgurskí moslimovia a čínski kresťania.

V tejto súvislosti dôrazne odsudzujeme násilné zmiznutie Gedhun Choekyi Nyima trvajúce dvadsaťpäť rokov. Je to tragický míľnik svedčiaci o pretrvávajúcom zločine, ktorý Čína spáchala nielen proti Gedhunovi Choekyimu Nyimovi a jeho rodine, ale aj proti všetkým Tibeťanom.

Vyzývame našu vládu, Európsku úniu a OSN, aby venovali pozornosť tomuto porušovaniu ľudských práv a vytvorili nátlak na Čínu, aby prepustila Gedhun Choekyi Nyimu a jeho rodinných príslušníkov a zabránili Číne zasahovať do náboženských praktík Tibeťanov vrátane ich systému uznania reinkarnácií.

Vyhlásenie podpísané / Signatári vyhlásenia:

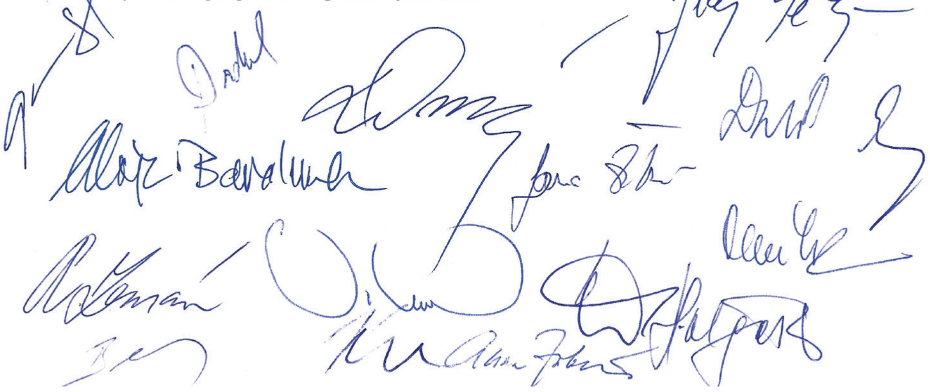

RIPUN BORA
MEMBER OF PALRLIAMENT
(RAJYA SABHA)
Member : Standing Committee on Petroleum and Natural Gas
Member : Consultative Committee on Road Transport and National Highways
Member : Committee of Privileges

सत्यमेव जयते

No. 10, Duplex Flat, North Avenue,
New Delhi-110001
Tel. : 011-23092203, 011-23092204
Mob. : 09013181489, 09435550049
09854040842, 09435006778
E-mail : ripunbora@rediffmail.com
ripun.bora@sansad.nic.in

Tibet's 11th Panchen Lama Gendhun Choekyi Nyima

Gedhun Choekyi Nyima was born on 25 April 1989 to Kunchok Phuntsog (father) and Dechen Chodon (mother) in Lhari district of Nagchu province in Tibet. When he was six-year-old, at the request of *Chadrel Rinpoche*[1], His Holiness the Dalai Lama conducted elaborate religious rites and rituals for identification of the reincarnation and recognized Gedhun Choekyi Nyima as the 11th Panchen Lama on 14 May 1995. But within three days, on 17 May 1995 he and his entire family were kidnapped by the Chinese authorities. Chadrel Rinpoche was also arbitrarily detained. Since then China has refused to divulge any sufficient and satisfactory information about their whereabouts. Instead, China installed its own puppet, a son of communist party members, as China's Panchen Lama.

The enforced disappearance of the 11th Panchen Lama Gedhun Choekyi Nyima, then world's youngest political prisoner, is a classic example of China's egregious violations of human rights of Tibetans rampant in the last six decades in Tibet. More than 1.2 million Tibetans were killed; many in concentration camps and more than 6,000 monasteries were destroyed in Tibet. When China kidnapped Panchen Lama, they denied its occurrence to the UN and a year later called it "protective custody".

The 25 years of enforced disappearance of Gedhun Choekyi Nyima and his family members is a continuous crime not just against him, his family and the Tibetan people but also against every individual who believes in the sanctity of human rights. This is a crime against humanity and China must be held accountable for this heinous act.

[1] Chadrel Rinpoche was the abbot of Tashi Lhunpo monastery in Tibet which is the seat of Panchen Lama. He was also the head of China's search committee for the reincarnation of 11th Panchen Lama.

Yours sincerely,

(RIPUN BORA) MP RS
President
Assam Pradesh Congress Committee

Senato della Repubblica

Statement on the 25th Year of Enforced Disappearance of Panchen Lama of Tibet, Gedhun Choekyi Nyima

On this 25th year of enforced disappearance of Gedhun Choekyi Nyima, the 11th Panchen Lama of Tibet, I call for his immediate release along with his entire family unconditionally. He was kidnapped by the Chinese authorities when he was six-year old and has not been seen in public since 17th May 1995.

Expressing my serious concerns over China's continued disregard of its International human rights obligations, the continued abduction of Panchen Lama of Tibet is a serious human rights issue in particular the violation of Tibetan people's right to freedom of religion and belief.

On the 25th year of the enforced disappearance of Panchen Lama of Tibet, I call upon China immediately reveal the fate and whereabouts of Gedhun Choekyi Nyima, the 11th Panchen Lama of Tibet. For the last six decades, China has not only suppressed Tibetan religious freedom in Tibet but has been used as a means to gain control over Tibetans.

The Chinese authorities must respect Tibetans' freedom of religion and right to choose their own religious heads without governmental interference.

Roberto Rampi
Member of Italian Parliament
Italian Senate
Roberto.Rampi@Senato.it

Samuel Cogolati
Député fédéral Ecolo-Groen

Brussels, 8 April 2020

Public statement of MP Samuel Cogolati
Gedhun Choekyi Nyima

Tibet continues to be rated as the second least free country in the world, after Syria. Tibetans say that it is easier to go to heaven than to get a passport from Chinese government. Tibet has been under iron-fist control of China for over six decades. The repressive nature of the rule is best exemplified by the case of Panchen Lama. He has not been seen for quarter of a century.

He was recognised as the reincarnation of the 10th Panchen Lama on 14 May 1995 by His Holiness the Dalai Lama. Three days later, on 17 May, the Chinese government abducted him along with his parents. For 25 years he has not been seen or heard in public, although it is believed he is still alive. On the 25th of this month he will be 31 years old.

The plight of Gedun Choekyi Nyima is particularly heart wrenching one for Tibetans. This recurring human rights abuse needs to be addressed. China's claim of him leading a healthy, normal life cannot be considered credible. Not when the world has not seen him actually alive. His enforced disappearance case was registered in 1995 with the UN Working Group on Enforced and Involuntary Disappearance. It is one of the oldest continuing cases of enforced disappearance in the world. And he is one of the world's longest-serving political prisoners and the youngest one at that.

As a Member of the Federal Parliament of Belgium and Vice-chair of the Foreign affairs Committee, I thereby express my strong support for the second highest figure in Tibetan Buddhism – Gedhun Choekyi Nyima.

To mark the 25th anniversary of his disappearance, this year, I have asked the Belgian Minister of Foreign affairs to send a strong message to Beijing to free him and his parents immediately without any conditions.

United States Department of State

Washington, D.C. 20520

Written statement by:
U.S. Ambassador at large for International Religious Freedom Samuel D. Brownback

In 2020, we mark a sad anniversary: 25 years since the Chinese Community Party (CCP) of the People's Republic of China (PRC) abducted the 11th Panchen Lama, Gedhun Choekyi Nyima. He was six years old. He and his family have not appeared in public since 1995.

The Panchen Lama is one of the most important figures in Tibetan Buddhism. But he is also a human being and, like all of us, he is entitled to fulfill his own hopes and dreams and to freely practice his Tibetan Buddhist faith. By abducting him when he was only six years old, the Chinese government not only robbed him of 25 years of his own personal, intellectual, and spiritual development, but also claimed the right to select and control all Tibetan Buddhist leaders, including a future Dalai Lama. Its attempt to install a fake Panchen Lama in 1995 likewise confirms that the CCP has no respect for Tibetan Buddhists, their faith, or their traditions.

After U.S. Secretary of State Michael R. Pompeo issued a strong statement calling on the Chinese government to immediately and publicly make the Panchen Lama's whereabouts known, the PRC stated that the now 31-year-old has graduated from college and has a job. The PRC owes the world an explanation of how the CCP can justify the abduction of a six-year-old, impede his religious training, and hide him from the world. The CCP's claim that it has the authority to select Tibetan Buddhist leaders was reaffirmed by General Secretary Xi Jinping at an August 2020 CCP meeting on Tibet, where Xi reiterated previous calls to "Sinicize" Tibetan Buddhism and to fight "splittism" in Tibet.

Let us be clear: CCP General Secretary Xi has called for the destruction of Tibetan Buddhism. "Sinicizing" Tibetan Buddhism means replacing authentic religious beliefs, traditions, and practices with the Party's socialist ideology. This would eliminate the role of individual conscience and belief, replacing the ethnic, religious, and cultural identity of Tibet with the atheist culture of the CCP. Members of all faith communities have the right to select, educate, and venerate their religious leaders in accordance with their beliefs and without government interference. Only Tibetan Buddhists can decide their legitimate religious leaders, and only they can manage the identification, succession, and education of Tibetan Buddhist lamas, including the Dalai Lama and the Panchen Lama.

The United States, consistent with our longstanding values, has prioritized the promotion and protection of religious freedom, an unalienable right central to the lives of all persons and free societies. Our advocacy is particularly focused on the PRC, where the CCP has waged a "life or death struggle" against Chinese people of all faiths – from Uyghur Muslims and members of other minority groups, to Tibetan Buddhists, Christians, and Falun Gong practitioners – in an attempt to maintain its authoritarian grip on power.

We call on the PRC to make public the Panchen Lama's whereabouts immediately, allow him to speak for himself, and uphold Beijing's international commitments to promote religious freedom for all persons, including members of ethnic and religious minorities. We call on other states to join together to promote religious freedom and human dignity in China and around the world.

Statement of Mr. Shimomura Hakubun, Member of Parliament and President of the All Party Japanese Parliamentary Support Group for Tibet, on the 25th anniversary of the disappearance of the 11th Panchen Lama Gedhun Choekyi Nyima

We, the All Party Japanese Parliamentary Support Group for Tibet, are seriously concerned over the repression and deteriorating human rights situation in Tibet as the Chinese Communist regime is increasingly becoming more authoritarian.

With the invasion of Tibet, China has been using the relationship between the Dalai Lama and the Panchen Lama as a means to sow discord among the Tibetan people and destroy their religion and culture.

After selecting their puppet Panchen Lama, the Chinese government kidnapped the Panchen Lama recognized by His Holiness the 14th Dalai Lama and imprisoned him as the world's youngest political prisoner. He is still in detention since last 25 years. It is a serious humanitarian crisis rarely seen in the world, and it would never be acceptable.

We resolutely condemn the Chinese Communist Party's religious persecution, and express deep concern over the Chinese Communist Party trying to destroy Tibetan cultural, religious and linguistic identities. China must announce the whereabouts of the Panchen Lama as soon as possible, and release him immediately by heeding the call of the international community.

Of course, the Chinese Communist Party has neither the right to select the successor of the Dalai Lama as well the Panchen Lama. No one in the world has this right except the Tibetan people. The Tibetan people, based on their Buddhist tradition, have the right to choose their religious leader and place of worship without interference from any country. The international community should firmly respect and defend such right.

We, the All Party Japanese Parliamentary Support Group for Tibet, will cooperate with countries around the world that share the same values of freedom, democracy, and the rule of law. We welcome the resolutions adopted in the Parliaments around the world against China, and that we are determined to act together.

Parlamentarische Gruppe Tibet
Groupe Parlementaire pour le Tibet
Parliamentary Group for Tibet

Binzstrasse 15
CH-8045 Zürich
buero@gstf.ch

Statement by Parliamentary Group for Tibet, Switzerland on the 25th Year of Enforced Disappearance of Panchen Lama of Tibet, Gedhun Choekyi Nyima

On the 25th year of the enforced disappearance of Panchen Lama of Tibet, Gedhun Choekyi Nyima, we call upon the Chinese government to immediately release him and his entire family.

For 25 years, since 17th May 1995, there has been no verifiable and sufficient information about the well-being and whereabouts of Gedhun Choekyi Nyima and his entire family.

Reiterating our concerns over China's continued denial of information about the Panchen Lama and refusal of an independent team to assess the ground situation in Tibet, we call upon the Chinese government to respect human rights in Tibet including cultural and religious freedom and resume dialogue with the representatives of His Holiness the Dalai Lama for peaceful resolution of Tibet.

With deep respect for Tibetan culture and peaceful resistance of Tibetan people, we continue to stand in solidarity with the Tibetan people.

Statement signed by:

Members of the Council of States
Maya Graf
Lisa Mazzone
Carlo Sommaruga

Members of the National Council
Prisca Birrer-Heimo
Laurence Fehlmann Rielle
Claudia Friedl
Balthasar Glättli
Nik Gugger
Barbara Gysi
Beat Jans
Irène Kälin
Fabian Molina
Martina Munz
Nicolas Walder
Cédric Wermuth

Berne, 13 May 2020

台灣國會西藏連線

Taiwan Parliament Group for Tibet

聲明書

Statement

1995 年 5 月 14 日，6 歲的根敦確吉尼瑪被達賴喇嘛依照藏傳佛教傳統，認定為十世班禪喇嘛的轉世靈童。3 天後，中國政府帶走根敦確吉尼瑪與家人，25 年來再也沒有人能得知他們的情況。

自達賴喇嘛尊者流亡印度後，中國政府從未停止破壞西藏傳統文化。中國政府用粗暴的綁架方式，剝奪班禪喇嘛轉世靈童根敦確吉尼瑪的宗教身分與宗教權利，近年更變本加厲推行西藏佛寺的「中國化」，強拆佛塔毀壞經幡，汙辱西藏的宗教自由，踐踏西藏人權。

宗教信仰自由是人民基本權利，中國政府應該尊重西藏的傳統文化。台灣與追求自由、平等、人權等普世價值的國際社會站在一起，持續關注西藏人權，譴責中國暴政。

台灣國會西藏連線代表台灣社會對於西藏人民一致的聲援，我們正告中國政府，應立即公開根敦確吉尼瑪及其家人的現況，釋放他們，並且停止一切迫害西藏人權的行動。

台灣國會西藏連線

會長：

副會長：

European Parliament

Brussels, 24 April 2020

Dear High Representative of the Union for Foreign Affairs and Security Policy/Vice-President of the Commission for a Stronger Europe in the World,

Dear European Commissioner for Justice,

We are writing to you on the occasion of the 31st birthday of Gedhun Choekyi Nyima, the 11th Panchen Lama of Tibet, which also marks the 25th anniversary of his disappearance.

Gedhun Choekyi Nyima was recognised as the reincarnation of the 10th Panchen Lama on 14 May 1995 by His Holiness the Dalai Lama. Three days later, the Chinese government abducted him along with his parents. Since then, he has not been seen or heard in public, although it is believed he is still alive.

His enforced disappearance case was registered in 1995 with the UN Working Group on Enforced and Involuntary Disappearance. It is one of the oldest continuing cases of enforced disappearance in the world. And he is one of the world's longest-serving political prisoners and the youngest one at that.

We would like to remind you that Tibet continues to be rated as the second least free country in the world, after Syria. Tibetans say that it is easier to go to heaven than to get a passport from the Chinese government. Tibet has now been under iron-fist control of China for over six decades. The repressive nature of the rule is best exemplified by the case of the Panchen Lama.

Since recurring human rights abuses from China needs to be addressed, we urge the European Commission to call upon the Chinese government to finally ensure freedom of religion and belief in Tibet, by freeing Gedhun Choekyi Nyima and his parents immediately without any conditions, together with all Tibetan political prisoners.

Yours sincerely,

Mikuláš **Peksa**
Member of the European Parliament (Greens/EFA)
President of the Tibet Interest Group

Co-signed by

1. MEP Alviina **Alametsä** (Greens/EFA)
2. MEP Patrick **Breyer** (Greens/EFA)
3. MEP Reinhard **Bütikofer** (Greens/EFA)
4. MEP Isabel **Carvalhais** (S&D)
5. MEP Antoni **Comín i Oliveres** (N-A)

6. MEP Petra **De Sutter** (Greens/EFA)
7. MEP Lucia **Ďuriš Nicholsonová** (ECR)
8. MEP Tanja **Fajon** (S&D)
9. MEP Raphaël **Glucksmann** (S&D)
10. MEP Francisco **Guerreiro** (Greens/EFA)
11. MEP José **Gusmão** (GUE/NGL)
12. MEP Svenja **Hahn** (Renew)
13. MEP Heidi **Hautala** (Greens/EFA)
14. MEP Hannes **Heide** (S&D)
15. MEP Marcel **Kolaja** (Greens/EFA)
16. MEP Miriam **Lexmann** (EPP)
17. MEP Aušra **Maldeikienė** (EPP)
18. MEP Marisa **Matias** (GUE/NGL)
19. MEP Tilly **Metz** (Greens/EFA)
20. MEP Javier **Nart** (Renew)
21. MEP Clara **Ponsatí i Obiols** (N-A)
22. MEP Carles **Puigdemont i Casamajó** (N-A)
23. MEP Diana **Riba i Giner** (Greens/EFA)
24. MEP Isabel **Santos** (S&D)
25. MEP Ivan **Štefanec** (EPP)
26. MEP Riho **Terras** (EPP)
27. MEP Marie **Toussaint** (Greens/EFA)
28. MEP Alexandr **Vondra** (ECR)
29. MEP Salima **Yenbou** (Greens/EFA)
30. MEP Tomáš **Zdechovský** (EPP)
31. MEP Milan **Zver** (EPP)

Tim Loughton M.P.
East Worthing and Shoreham

HOUSE OF COMMONS
LONDON SW1A 0AA

23 June 2020

Statement – 11th Panchen Lama

On 17th May 2020, the Tibetan diaspora all over the free world, marked the 25th commemoration anniversary of the abduction and disappearance of the second highest spiritual leader of Tibet - Gendun Choekyi Nyima, 11th Panchen Lama. He and his family were abducted when he was just six by the Chinese security forces. This year, he turned thirty-one, making this one of the oldest continuous case of enforced disappearance. We have no record of where he is, how he is, and how his family are; except just a few words of empty assurances from the Chinese government that he is doing well. That is not good enough.

The 11th Panchen Lama needs to be released and revealed to the world. He and all other Tibetan people in Tibet needs to live in liberty. Since 1959, with the invasion of Tibet by the Chinese government, more than a million Tibetans have lost their lives. They have lost their liberty, and they see the daily suppression of their culture, beliefs, religion, and way of life. This is an injustice that we need to stand up to. As the American civil rights leader, Martin Luther King, once said, "Injustice anywhere is a threat to justice everywhere."

I want to send a strong message to China, the Tibetans inside Tibet and in exile, as well as the international community that the people of the UK support the cause of the Tibetan people. We support the Tibetan struggle and we will use every opportunity to put the spotlight on China for the injustices they continue to put on the oppressed people of Tibet. Let me remind you that the cause of Tibet is not just about human rights, it is also about the environment and our planet. Tibet is responsible for forty percent of the world population's water supply. What China does in Tibet affects not just Tibet but the whole planet. China is bringing environmental damage and destruction to Tibet and ultimately, our entire planet.

It is the responsibility of everyone who appreciates and cherishes freedom, to stand up against China and to say: what you are doing is not right. The people of Tibet, the Panchen Lama, deserve their freedom. It is long overdue.

Tim Loughton MP

www.timloughton.com loughtont@parliament.uk
The East Worthing and Shoreham Constituency includes
Coombes, Fishersgate, Kingston Buci, Lancing, Shoreham, Sompting, Southwick,
and the eastern wards of Worthing: Broadwater, Gaisford, Offington and Selden.

"Democracy means freedom to choose"

INKATHA

Inkatha Freedom Party
Iqembu leNkatha YeNkululeko

IFP Head Office
No 2 Durban Club Place
Durban 4001
P. O. Box 4432 Durban 4000
Tel: 031—365 1300
Fax: 031-30702177

This use of this letterhead cannot constitute a Purchasing Order.

THE OFFICE OF THE IFP PRESIDENT

FROM : THE IFP PRESIDENT

ON THE 25TH ANNIVERSARY OF THE DISAPPEARANCE OF THE 11TH PANCHEN LAMA

South Africa's experience under apartheid of activists 'going missing', never to be heard from again, has heightened our sensitivity to this particular atrocity against human rights.

The IFP therefore supports the continuous call by human rights organisations throughout the world for the release of Tibet's Gendun Choekyi Nyima, who was named the Panchen Lama in May 1995 by His Holiness the Dalai Lama.

The Panchen Lama is considered to be youngest political prisoner in the world, having been taken into so-called protective custody by China when he was just 6 years old. If he is indeed in protective custody, that should have ended when he turned 18. Yet the UN Committee on the Rights of the Child has consistently been denied access to the Panchen Lama.

It is now 25 years since he and his family were seen. The question of his whereabouts remains unanswered. We believe that he must be released. Every person has a right to their identity, culture, security and liberty, simply by virtue of being human.

It is well known that the IFP supports Tibet's quest for autonomy within China in accordance with the Middle Way approach. We have openly called for China to

DURBAN OFFICE
2 Durban Club Place
Durban
4001

PRESIDENT
Mr VF Hlabisa
Deputy President : Inkosi EM Buthelezi
National Chairperson : Mr MB Gwala
Secretary General : Mr SL Ngcobo

ULUNDI OFFICE
B 82 Princess Mkabayi Street
Ulundi
3838

recognise Tibet's unique cultural identity, to adhere to international standards of human rights, to be willing to engage diplomatic negotiations, and to accept autonomy for Tibet.

We have also spoken against China's exploitation of Tibet's natural resources, which is causing environmental degradation, and their attempt to assimilate Tibetans which is destroying a cultural heritage.

The IFP believes that South Africa's own freedom places upon us the responsibility to promote freedom for all people and all nations. The mere fact that human rights abuses continue, anywhere, in a world that embraces democracy and freedom, should concern us all.

Once again, therefore, the IFP joins the call for the release of the Panchen Lama.

THE HON. MR VF HLABISA MPL
PRESIDENT OF THE INKATHA FREEDOM PARTY

21 May 2020

The Hon. Warren Entsch MP

Federal Member for Leichhardt

Email: warren.entsch.mp@aph.gov.au **Web:** www.warrenentsch.com.au

Statement from Warren Entsch MP

as Co-Chair of the Australian Parliamentary Friendship Group for Tibet

"Today, there are a few thousand political prisoners in Tibet.

I have had the pleasure of meeting many former Tibetan political prisoners who now live in Australia. Listening to their stories, I have learned a lot about the suffering of many Tibetans.

As tragic as some of these stories are, they reveal the extraordinary courage of the Tibetan people.

I want to talk about one political prisoner inparticular, the Panchen Lama of Tibet. He was six years old when he was abducted by the Chinese government some twenty-five years ago.

To this day, the Tibetan and the international community do not know where he is. The Panchen Lama story represents China's violation of religious freedom in Tibet and interference in an ancient religious tradition.

I call on the Chinese government to let the Panchen Lama of Tibet free."

22/07/2020

Electorate Office:
200 Mulgrave Road, Cairns, QLD, 4870
Phone: 07 4051 2220 **Fax:** 07 4031 1592

Parliament House:
Suite RG60, House of Representatives, Canberra, ACT, 2600
Phone: 02 6277 4803 **Fax:** 02 6277 2238

Thursday Island Office:
Douglas Street, Thursday Island, QLD, 4875
Phone: 07 4069 1393 **Fax:** 07 4069 1822

टिप्पणियाँ

1. Reuters, “China says Panchen Lama living a normal life 20 years after disappearance,” *The Guardian,* September 6, 2015, https://www.theguardian.com/world/2015/sep/06/china-says-panchen-lama-living-a-normal-life-20-years-after-disappearance.

2. James Griffiths, “A boy chosen as the Panchen Lama disappeared in 1995. China says he’s now a college grad with a job,” *CNN,* May 21, 2020, https://edition.cnn.com/2020/05/20/asia/china-tibet-panchen-lama-dalai-lama-intl-hnk/index.html.

3. Robbie Barnett, Preface to *A Poisoned Arrow: The Secret Report of the 10th Panchen Lama,* by Tibet Information Network (London: Tibet Information Network, 1997), 11.

4. Dawa Norbu, Historical Introduction to *A Poisoned Arrow: The Secret Report of the 10th Panchen Lama,* by Tibet Information Network (London: Tibet Information Network, 1997), xxv.

5. Norbu, Historical Introduction to *A Poisoned Arrow: The Secret Report of the 10th Panchen Lama*, xxvii.

6. H.H. the Dalai Lama, *My Land and My People* (New York: McGraw-Hill Book Company, 1962), 117.

7. Isabel Hilton, *The Search for the Panchen Lama* (London: Penguin Books, 2000), 260.

8. Ibid., 282.

9. Ibid., 46.

10. Tsepon Wangchuk Deden Shakabpa, One Hundred Thousand Moons: An Advanced Political History of Tibet Volume 1, translated by Derek F. Maher (Leiden: Brill, 2010), 332.

11. Hilton, The Search for the Panchen Lama, 46.

12. H.H. the Dalai Lama, My Land and My People, 113.

13. Hilton, The Search for the Panchen Lama, 130.

14. Ibid., 155.

15. Tibet Information Network, *A Poisoned Arrow: The Secret Report of the 10th Panchen Lama* (London: Tibet Information Network, 1997), 102.

16. Shakya, *The Dragon in the Land of Snows,* 273.

17. Ibid., 273.

18. Hilton, The Search for the Panchen Lama, 159.

19. Ibid., 159.

20. Ibid., 161.

21. Ibid., 162.

22. Barnett, Preface to *A Poisoned Arrow: The Secret Report of the 10th Panchen Lama*, 13.

23. Ibid.

24. Ibid.

25. Hilton, The Search for the Panchen Lama, 184.

26. Ibid., 184.

27. Ibid., 184.

28. Ibid., 194.

29. Barnett, Preface to *A Poisoned Arrow: The Secret Report of the 10th Panchen Lama*, 18.

30. Norbu, Historical Introduction to *A Poisoned Arrow: The Secret Report of the 10th Panchen Lama*, xxvi.

31. Shakya, *The Dragon in the Land of Snows,* 441.

32. Ibid., 444.

33. Ibid., 441.

34. Ibid.

35. Hilton, The Search for the Panchen Lama, 200.

36. Ibid.

37. Ibid., 207.

38. Shakya, *The Dragon in the Land of Snows,* 42.

39. Gordon Fairclough, "A New Role for Beijing's Panchen Lama," *The Wall Street Journal,* March 1, 2010, https://www.wsj.com/articles/BL-CJB-7504.

सन्दर्भ ग्रंथसूची

Barnett, Robbie. Preface to *A Poisoned Arrow: The Secret Report of the 10th Panchen Lama,* by Tibet Information Network, ix-xx. London: Tibet Information Network, 1997.

Fairclough, Gordon. "A New Role for Beijing's Panchen Lama." *The Wall Street Journal,* March 1, 2010. https://www.wsj.com/articles/BL-CJB-7504.

Griffith, James. "A boy chosen as the Panchen Lama disappeared in 1995. China says he's now college grad with a job." *CNN,* May 21, 2020. https://edition.cnn.com/2020/05/20/asia/china-tibet-panchen-lama-dalai-lama-intl-hnk/index.html.

H.H. the Dalai Lama. *My Land and My People.* New York: McGraw-Hill Book Company, 1962.

Hilton, Isabel. *The Search for the Panchen Lama.* London: Penguin Books, 2000.

Norbu, Dawa. Historical Introduction to *A Poisoned Arrow: The Secret Report of the 10th Panchen Lama,* by Tibet Information Network, xi-xxix. London: Tibet Information Network, 1997.

Reuters. "China says Panchen Lama living a normal life 20 years after disappearance." *The Guardian,* September 6, 2015. https://www.theguardian.com/world/2015/sep/06/china-says-panchen-lama-living-a-normal-life-20-years-after-disappearance.

Shakabpa, Tsepon Wangchuk Deden. *One Hundred Thousand Moons: An Advanced Political History of Tibet Volume 1.* Translated by Derek F. Maher. Leiden: Brill, 2010.

Shakya, Tsering. *The Dragon in the Land of Snows.* London: Pimlico, 1999.

Tibet Information Network. *A Poisoned Arrow: The Secret Report of the 10th Panchen Lama.* London: Tibet Information Network, 1997.

"The safety of Gedhun Choekyi Nyima and his proper religious training is of particular concern to me. He has not been seen in public for some months and is reported to be detained somewhere in Beijing. I, therefore, appeal to all governments, religious and human rights organizations for their intervention in ensuring the safety and freedom for the young Panchen Lama."

– H.H. the 14th Dalai Lama, 1995

"When I was visiting and inspecting several places in Qinghai province, many Tibetan people came to pay religious homage to me…. No matter whether they were men or women, old or young, as soon as they saw me, they thought of the bitterness of that period, and they were unable to prevent tears flowing from their eyes. A few brave people among them said through their tears: Do not let all living creatures starve! Do not let them destroy Buddhism! Do not let them extinguish the people of our snow land! These are our wishes and our prayers!"

– H.E. the 10th Panchen Lama, 1962

सूचना एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग
केंद्रीय तिब्बती प्रशासन